दैनिक

भोपाल की धड़कन

सांध्यप्रकाश

dainiksandhyaprakash.in

संस्थापक- स्व. सुरेंद्र पटेल

वर्ष 52/ अंक 231/ पृष्ठ 8 / मूल्य ₹ 2.10 भोपाल, गुरुवार 06 अप्रैल 2023 भोपाल से प्रकाशित

■आर.एन.आई 22296/71 ■डाक पंजीयन मप्र/भोपाल/125/12-14

सांध्यप्रकाश विशेष

जब लोगों के चढ़ने से टूटा था अर्जुन सिंह का मंच!

(वरिष्ठ पत्रकार जय नागड़ा की प्रासंगिक टिप्पणी)

खंडवा। बात पुरानी लेकिन प्रासंगिक है। अविभाजित मध्यप्रदेश के दुर्ग में जनवरी 1993 में तब वरिष्ठ कांग्रेस नेता अर्जुन सिंह की सभा का आयोजन था। मंच पर बहुत सारे लोग चढ़ गए, तो अचानक मंच भरभराकर टूट गया। अर्जुन सिंह सहित तमाम नेता लड़खड़ाकर जमीन पर आ गिरे। खासा हल्ला मचा, वहां के एसपी पर दोषारोपण हुआ कि मंच की सुरक्षा का उन्हे ख्याल रखना चाहिए था, उनके विरुद्ध कार्यवाही हो। एसपी को निलंबित किया जाए जैसे बयान भी आए।

अब जवाब देने की बारी एसपी की थी, उन्होंने सीधे कार्यक्रम के संयोजक स्थानीय कांग्रेस नेता बदरुद्दीन कुरैशी (जो

बाद में छत्तीसगढ़ में मंत्री भी रहे) के विरुद्ध आपराधिक लापरवाही का प्रकरण दर्ज कर लिया और उनकी गिरफ्तारी कर चालान भी न्यायालय में पेश कर दिया। अब पूरे प्रदेश की राजनीति में हड़कंप मच गया कि कांग्रेस के प्रभावशाली नेता को एसपी ने गिरफ़्तार कैसे कर लिया! एसपी के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही का दबाव बनने लगा। तब प्रदेश में राष्ट्रपति शासन था और तत्कालीन राज्यपाल कुंवर मेहमूद अली भी एसपी को निलंबित करने का मन बना चुके थे। राष्ट्रपति शासन में सत्ता के सारे अधिकार राज्यपाल के पास ही केंद्रित थे इसलिए उनके निर्णय को बदलना नामुमकिन सा था।

तत्कालीन एडीजी इंटेलिजेंस एनके शुक्ला ने तत्कालीन प्रमुख सचिव गृह एनबी लोहानी को बताया कि दुर्ग एसपी प्रेमलाल पांडे बहुत ईमानदार, कर्मठ और स्वच्छ छवि रखते हैं। उन पर इस तरह की कोई कार्यवाही होती है तो इसका बहुत खराब संदेश पूरे प्रदेश में प्रशासनिक हलकों में जाएगा। इससे पुलिस बल का मनोबल भी गिरेगा। इस बात से जब लोहानी साहब भी सहमत हुए, तो दोनों ने मिलकर राज्यपाल को अवगत कराया। नतीजतन राज्यपाल को भी अपना निर्णय बदलना पड़ा।

दरअसल तत्कालीन दुर्ग एसपी प्रेमलाल पांडेय का स्पष्ट मत था कि वह आयोजन कांग्रेस का था, इसके लिए कांग्रेस के आयोजक ही जिम्मेदार थे। वहां मंच की सुरक्षा को लेकर वे और कलेक्टर आयोजकों को पहले ही सख्त निर्देश दे चुके थे कि मंच पर दस-पंद्रह से ज्यादा लोग नहीं होना चाहिए। लेकिन, जब अर्जुनसिंह आए तो उन्हें माला पहनाने की होड़ में अचानक भीड़ मंच पर आ गई और मंच धसक गया। ज़ाहिर है सख्त अधिकारी होने के नाते एसपी पांडे ने वही किया जो विधिसम्मत था। महत्वपूर्ण बात यह है कि तब उनके वरिष्ठ अधिकारियो ने भी उनकी सही बात का पुरजोर समर्थन किया और प्रशासनिक मजबूती की मिसाल कायम की।

और अब..सारे प्रोटोकॉल ही ख़त्म

खंडवा में कल मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का कार्यक्रम था। मंच पर इतने लोग चढ़ गए कि अफ़रा-तफ़री मच गई। हर कोई छोटा-बड़ा नेता मुख्यमंत्री के करीब दिखना चाहता था, जिससे उसका बौना कद भी बढ़ जाए। प्रशासनिक अधिकारी भी उसे पहचानने लगे, जनता में भी वह अपना रुतबा गांठ सके।

आयोजन सरकारी था, लेकिन इस पर कब भाजपा का कब्ज़ा हो गया। यह अधिकारियों को ही नहीं पता चला। प्रोटोकॉल के मुताबिक शासन और सत्ताधारी दल के बीच एक महीन लेकिन स्पष्ट दूरी होती है। लम्बे अरसे तक मंच पर शासन के प्रतिनिधि या निर्वाचित जनप्रतिनिधि (सांसद ,विधायक , महापौर, जिला पंचायत अध्यक्ष आदि) ही होते थे पार्टी के अध्यक्ष और अन्य पदाधिकारी दर्शक दीर्घा में स्थान पाते थे। लेकिन, समय के साथ सारे प्रोटोकॉल ध्वस्त होते चले गए। पार्टी के अध्यक्ष तक तो ठीक उसके छर्रे तक अब मंच पर होते है। ऐसे में व्यवस्थाएं पूरी तरह धवस्त हो जाती है, कोई अनहोनी हो जाए तो ठीकरा प्रशासन पर ही फूटना तय है।

कल भी यही हुआ 'लाड़ली बहना सम्मेलन' में मुख्यमंत्री की लाड़ली बहनों से ज़्यादा 'लाड़लों में मंच पर चढ़ने की होड़ मच गई। हालात जब निचले स्तर के पुलिसकर्मियों से नहीं सम्भले, तो पुलिस अधीक्षक को कमान संभालनी पड़ी। इसी दौरान मंत्री पुत्र दिव्यादित्य शाह भी मंच पर चढ़ने लगे, तो एसपी ने उनसे कार्ड माँगा। नहीं बताने पर अप्रिय घटनाक्रम हुआ। हालाँकि जब एसपी के संज्ञान में यह बात आई, तो उन्होंने ही दिव्यादित्य शाह को मंच पर बैठाया। इसके बाद मंत्री और उनके समर्थको ने जो बवाल मचाया वह सभी के सामने है। हैरानी की बात यह है कि प्रदेश शासन के इस पॉवरफुल मंत्री को मुख्यमंत्री तक अपनी बात पहुंचाने के लिए मीडिया की ज़रुरत क्यों पड़ी? क्या वे मंत्री के रूप में स्वयं को कमज़ोर पा रहे थे? प्रशासन में उनकी सीधी सुनवाई नहीं हो रही है? ऐसे कई सवाल उठने लगे है कि क्या प्रशासन पर मुख्यमंत्री का ही केंद्रीकृत नियंत्रण हो गया है? कल तक मंत्री और उनके समर्थकों के तेवर विपक्ष में बैठे नेताओं की तरह थे। लेकिन, आज उसमे पार्टी यू-टर्न लेती तब दिखी जब विधायक राम दांगोरे ने यह कहा कि हम विरोध प्रदर्शन करने थोड़े ही आए हैं प्रशासन तक अपनी बात पहुँचाने आए है ,हम सत्ता में है हमें विरोध की क्या ज़रूरत? सबसे दुखद पहलू यह है कि पूरा प्रशासन इस मामले में बैकफुट पर आ गया है। वो स्वयं अपराधबोध से ग्रस्त दिख रहा है गोया उससे महापाप हो गया हो। क्या शासकीय कार्यक्रम के प्रोटोकॉल के कोई अब मायने नहीं रह गए ! सत्ता की कमान अब निर्वाचित प्रतिनिधियों के बजाए सीधे पार्टी जनों के हाथ आ चुकी है। दूसरी त्रासदी यह भाजपा के लिए भी है कि उसके नेता इतने दम्भी हो गए है कि उन्हें जनता के बीच बैठने में शर्म महसूस हो रही है। सभी वीआईपी का तमगा लगाए अपना रुतबा गांठ रहे है और आम जनता से दूरियां बढ़ा रहे है। अकेले सत्ता में वापसी का दारोमदार शिवराज जी के पास है, जो स्वयं को विनम्र और आम आदमी के रूप में प्रस्तुत करना चाहते है। इतिहास गवाह है कि दम्भ ने ही नेताओं को हमेशा बाहर किया।

OUR PREDICTION CAME TRUE

WHISPERSINTHECORRIDORS.COM

Now PM Narendra Modi is talking about corruption now on every platform

'No corrupt person should be spared. Rs 48,20,69,00,00,000 corruption under #Congress rule'.' Don't spare the corrupt, however powerful '."CBI's name is on everyone's lips. It is like a brand for truth and justice".

(WE SAID THIS ON MARCH 31, 2023)

Corruption to be main electoral issue of Modi!

At BJP headquarters PM Modi has sounded the bugle for Election 2024. After the so-called opposition unity, Modi will vehemently shout about the corruption of the regional parties in all the election meetings.

पूर्व आईएएस अधिकारी राकेश श्रीवास्तव को पीएचडी

इंदौर। इंदौर की सुप्रसिद्ध मालवांचल यूनिवर्सिटी द्वारा प्रदेश के पूर्व आईएएस अधिकारी राकेश कुमार श्रीवास्तव को पीएचडी की मानद डिग्री प्रदान की जा रही है। उन्हें यह डिग्री 8 अप्रैल 2023 को मालवांचल यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित समारोह में दी जाएगी। राकेश श्रीवास्तव भारतीय प्रशासनिक सेवा में 1993 बैच के अधिकारी हैं। वे इंदौर, ग्वालियर सहित कई जिलों के कलेक्टर रहने के बाद प्रदेश के संवेदनशील विभाग जनसंपर्क के आयुक्त और सचिव रहे हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा में वे प्रमुख सचिव पद से रिटायर हुए।

पुस्तकें, कापियां, यूनिफार्म खास दुकान से खरीदने के लिए स्कूल बाध्य नहीं करें!

इंदौर। कलेक्टर व जिला दंडाधिकारी डॉ इलैयाराजा टी ने स्कूल ड्रेस और कॉपी-किताबों के संबंध में स्कूल संचालकों, प्रकाशकों एवं विक्रेताओं की एकाधिकार को खत्म करने के लिए दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा-144 के तहत आदेश जारी किए हैं। इसके तहत स्कूल में संचालित प्रत्येक कक्षा के लिये अनिवार्य पुस्तकों की सूची स्कूल की वेबसाईट पर अपलोड करना अनिवार्य होगा। पुस्तकों की सूची स्कूल परिसर में सार्वजनिक स्थान पर चस्पा करना भी जरूरी होगा।

जारी आदेशानुसार स्कूल संचालक / प्राचार्य स्कूल में संचालित प्रत्येक कक्षा के लिये अनिवार्य पुस्तकों की सूची विद्यालय के परीक्षा परिणाम के पूर्व अपने स्कूल की वेबसाईट पर अनिवार्य रूप से अपलोड करेंगे एवं अपने स्कूल परिसर में सार्वजनिक स्थान पर चस्पा करेंगे। मान्यता नियमों के अन्तर्गत वेबसाईट होना अनिवार्य है, साथ ही पुस्तकों की सूची की एक प्रति प्रवेशित अभिभावकों को प्रवेश के समय एवं परीक्षा परिणाम के समय तक उपलब्ध करायेंगे।

स्कूल संचालक / प्राचार्य, विद्यार्थी एवं उनके अभिभावकों को सूचीबद्ध पुस्तकें परीक्षा परिणाम अथवा उसके पूर्व क्रय किये जाने हेतु बाध्य नहीं करेंगे। अभिभावक पुस्तकों की उपलब्धता के आधार पर 15 जून 2023 तक क्रय कर सकेंगे। ऐसी स्थिति में अप्रैल माह में प्रारंभ होने वाले शैक्षणिक सत्र में प्रथम तीस दिवस की अवधि 01 अप्रेल 2023 से 30 अप्रेल 2023 तक के मध्य का उपयोग विद्यार्थियों के ओरिएंटेशन, व्यावहारिक व मनोवैज्ञानिक पध्दति से शिक्षण में किया जाएगा। स्कूल संचालक जिस नियामक बोर्ड यथा सी.बी.एस.ई./आईसीएसई / माध्यमिक शिक्षा मण्डल से संबंद्ध है उस संस्था के द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम व पाठ्यक्रम के अन्तर्गत नियामक संस्था अथवा उसके द्वारा विधिक रूप से अधिकृत एजेंसी यथा एनसीईआरटी पाठ्य पुस्तक निगम आदि के द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य प्रकाशकों / मुद्रकों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पुस्तकों को विद्यालय में अध्यापन के लिए प्रतिबंधित करेंगे।

भाजपा का 43वां स्थापना दिवस

हनुमानजी के 'कैन डू' एटीट्यूड की तरह काम करती है भाजपा: मोदी

नई दिल्ली। भाजपा ने गुरुवार को अपना 43वां स्थापना दिवस मनाया। इस मौके पर पीएम मोदी ने कार्यकर्ताओं को 45 मिनट तक संबोधित किया। आज हनुमान जयंती है तो उनके कामों का उदाहरण देकर भाजपा की कार्यशैली का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि भाजपा हनुमानजी के कैन डू एटीट्यूड की तरह काम करती है और सबकी मदद करने की कोशिश भी करती है।

पीएम ने जनसंघ और आज की भाजपा की बात की। कहा कि कार्यकर्ता अतिआत्मविश्वास में ना रहें। लोगों से जुड़ें। कांग्रेस और दूसरे विपक्षी दलों पर निशाना साधा। कहा कि ये दल भाजपा के काम को पचा नहीं पा रहे हैं। ये हताश लोग कह रहे हैं कि मोदी तेरी कब्र खुदेगी। उन्होंने भाजपा के फ्यूचर प्लान को भी कार्यकर्ताओं के साथ शेयर किया।

मोदी ने कहा, आज तक जिन महान लोगों ने पार्टी को संवारा है, समृद्ध और सशक्त किया है, उन कार्यकर्ताओं और नेताओं को शीश झुकाकर प्रणाम करता हूं। 43 साल पहले 6 अप्रैल 1980 को भाजपा का गठन हुआ था। उन्होंने कहा कि हनुमानजी सब कुछ कर सकते हैं, सबके लिए करते हैं, लेकिन अपने लिए कुछ नहीं करते। यही भाजपा की प्रेरणा है। एक और प्रेरणा है। जब हनुमानजी को राक्षसों का सामना करना पड़ा तो वो कठोर हो गए। जब भ्रष्टाचार, परिवारवाद, कानून-व्यवस्था की बात आती है तो भाजपा उतनी ही संकल्पबद्ध हो जाती है मां भारती को मुक्त कराने के लिए। कौन सो काज कठिन जग माहीं, जो नहिं होइ तात तुम पाहीं। ऐसा कोई भी काम नहीं है, जो हनुमान नहीं कर सकते। लक्ष्मण पर संकट आया तो हनुमान संजीवनी पर्वत ले आए। भाजपा भी लोगों की समस्या हल करने के लिए ऐसा प्रयास करती रही है, करती रहेगी। राम काज किन्हें बिनु मोहि कहां विश्राम।

हताश विपक्ष कह रहा- मोदी तेरी कब्र खुदेगी

जब हमारा मजाक उड़ाकर सफल नहीं हुए तो बादशाही मानसिकता वाले लोगों की नफरत और बढ़ गई। दशकों से हिंसा झेल रहे कश्मीर और नॉर्थ ईस्ट में शांति का सूरज उगेगा, ये उन्होंने सोचा नहीं था। आर्टिकल 370 इतिहास हो जाएगा, ये उन्होंने कल्पना नहीं की थी। जो काम दशकों तक नहीं हुए, वो भाजपा कैसे कर रही है, वो इन्हें पच नहीं रहा है। नफरत से भरे ये लोग झूठ बोले जा रहे हैं। अपने भ्रष्ट कर्मों का खुलासा होते देख ये बेचैन हैं और हताशा से भर गए हैं। इतने निराश हैं कि एक ही रास्ता दिख रहा है। खुलकर कह रहे हैं कि मोदी तेरी कब्र खुदेगी। वो कब्र खोदने की धमकी दे रहे हैं।

भोपाल में पार्टी कार्यालय फहराया ध्वज, मोदी-नड्डा को सुना

स्थापना दिवस पर पार्टी संगठन द्वारा अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। प्रदेश एवं जिला कार्यालयों पर विशेष सजावट की गई है। प्रदेश में भाजपा के स्थापना दिवस का मुख्य कार्यक्रम भोपाल में पुरानी आरटीओ बिल्डिंग में स्थित पार्टी के प्रदेश मुख्यालय पर हुआ, जहां प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा ने पार्टी का ध्वज फहराया। इस कार्यक्रम में सीएम शिवराज सिंह चौहान के साथ-साथ पार्टी के तमाम पदाधिकारी, नेता व बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे। पार्टी के बूथों पर भी स्थापना दिवस के कार्यक्रम हो रहे हैं। स्थापना दिवस पर झंडावंदन कार्यक्रम के बाद पार्टी पदाधिकारियों, जनप्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं ने प्रदेश के प्रत्येक बूथ पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा के संबोधन को सुना। युवा चौपालों में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ग्वालियर में, पार्टी के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री शिवप्रकाश धार, प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा भोपाल ग्रामीण के बैरसिया, प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद नरेला विधानसभा एवं युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष वैभव पंवार रायसेन में युवाओं को मार्गदर्शन देंगे। इसी प्रकार पार्टी एवं मोर्चा के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि प्रदेश के अलग अगल स्थानों पर आयोजित चौपालों में सम्मिलित होंगे।

आशीष सिंह ने संभाला भोपाल कलेक्टर का कार्यभार

जनता की समस्याओं को सुलझाना सर्वोच्च प्राथमिकता

भोपाल। भोपाल के नए कलेक्टर आशीष सिंह ने चार्ज ले लिया है। निवृतमान कलेक्टर अविनाश लवानिया ने चार्ज सौंपा। इसके बाद सिंह ने कामकाज संभाला। वे कौन बनेगा करोड़पति की हॉट सीट पर भी बैठ चुके हैं। वहां इन्होंने 12.50 लाख रुपए भी जीते थे। कलेक्टर का प्रभार लेने के बाद उन्होंने कहा- मेरी प्राथमिकता जनता की समस्याओं पर रहेगा। जितनी शिकायतें आती हैं, उनका शीघ्र ही निराकरण किया जायेगा। भोपाल शहर में उज्जैन लोक महाकाल की तर्ज पर कार्य किया जायेगा।

उन्होंन कहा कि राजधानी होने के चलते चुनौतियां भी रहेंगी। कार्य का दबाव अधिक रहेगा। शहर से लगे क्षेत्रों में हो रहे अवैध प्लाटिंग पर शिकंजा कसा जायेगा और दंडात्मक कार्यवाही की जायेगी। इंदौर शहर ने जब स्वच्छता की हैट्रिक लगाई थी, तब आशीष सिंह वहां निगम कमिश्नर थे। ,इंदौर-उज्जैन निगम कमिश्नर रहते उन्हें स्वच्छ सर्वेक्षण का अच्छा एक्सपीरियंस है, जिसका फायदा भोपाल को भी मिलेगा। आशीष सिंह 2010 बैच के आईएएस अफसर हैं। उनकी पहली पोस्टिंग कटनी में अपर कलेक्टर के रूप में हुई थी। इसके बाद इंदौर जिला पंचायत सीईओ, उज्जैन नगर निगम कमिश्नर, देवास कलेक्टर, इंदौर नगर निगम कमिश्नर और फिर उज्जैन कलेक्टर रहे। उज्जैन कलेक्टर रहने उनका कार्यकाल बेहतर रहा। कुछ समय पहले ही उन्हें भोपाल बुलाया गया था। अब कलेक्टर की जिम्मदारी दी गई है। कार्यभार ग्रहण करने के बाद कलेक्टर आशीष सिंह ई-केवायसी केंद्र लाडली बहना आवेदन के काम का निरीक्षण करने के लिए हमीदिया अस्पताल के पास रॉयल मार्केट पहुंचे।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ एवं छिन्दवाड़ा सांसद नकुलनाथ ने आज हनुमान जयंती के पावन अवसर पर छिन्दवाड़ा में भव्य श्री गदा यात्रा का शुभारंभ किया।

हनुमान जयंती पर न्यू मार्केट हनुमान मंदिर में विशेष पूजन एवं आरती सम्पन्न हुई।

आरबीआई का फैसला: ब्याज दर में बदलाव नहीं, महंगे नहीं होंगे लोन

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक यानी आरबीआई ने गुरुवार को रेपो रेट में इजाफा न करने का फैसला किया है। यानी ब्याज दर 6.50 प्रतिशत बनी रहेंगी। इससे पहले आरबीआई ने रेपो रेट में लगातार 6 बार इजाफा किया था। आज के आरबीआई के फैसले से पहले एक्सपर्ट अनुमान जता रहे थे कि रेपो रेट में 25 बेसिस प्वाइंट यानी 0.25 प्रतिशत का इजाफा किया जा सकता है। ऐसा इसलिए क्योंकि हाल ही मे फेडरल रिजर्व, यूरोपियन सेंट्रल बैंक, बैंक ऑफ इंग्लैंड समेत दुनिया के तमाम सेंट्रल बैंकों ने ब्याज दरें बढ़ाई थी। आरबीआई ने पिछले फाइनेंशियल ईयर में 6 बार में ब्याज दरों में 2.50 प्रतिशत की बढ़ोतरी की है।

खरगोन के रेणुका माता मेले में मटका कुल्फी खाने से 40 लोग बीमार

खरगोन। खरगोन जिले के मेनगांव थाना क्षेत्र के राजपुरा और छटलगांव के बीच बुधवार को लगे एक दिवसीय रेणुका माता के मेले मे मटका कुल्फी खाने से करीब 40 लोग फूड पायजनिंग के शिकार हो गए। पेट दर्द के साथ ही उल्टी दस्त की शिकायत के बाद तबाड़तोड़ नागझिरी, राजपुरा, छटलगांव, बडगांव, घट्टी और बलगांव के लोगों को जिला अस्पताल खरगोन में भर्ती कराया गया। राजपुरा और छटलगांव के बीच स्थित रेणुका माता मंदिर पर एक दिवसीय मेले का आयोजन किया जाता है। बताया जा रहा है की बीती रात मटका कुल्फी खाने के बाद देर रात करीब 40 लोग फूड पायजनिंग के शिकार हो गए।

नहीं चली संसद, लोकसभा अनिश्चितकाल के लिए स्थगित

नई दिल्ली। 13 मार्च से शुरू हुए संसद के बजट सत्र के दूसरे चरण में विपक्ष और सत्ता पक्ष के हंगामे के कारण लोकसभा और राज्यसभा में बार-बार व्यवधान हुआ। दोनों सदनों की कार्यवाही ठीक तरह से नहीं चल पाई। बजट सत्र का पहला चरण 31 जनवरी को राष्ट्रपति के अभिभाषण से शुरू हुआ था। बजट सत्र का दूसरा चरण आज यानी छह अप्रैल तक ही निर्धारित है। संसद के बजट सत्र के अंतिम दिन लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सांसदों की शिष्टाचार बैठक आयोजित की। इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी शामिल हुए।

विपक्ष का तिरंगा मार्च- दिल्ली में संसद के बजट सत्र के आखिरी दिन विपक्षी सांसदों ने संसद से विजय चौक तक तिरंगा मार्च निकाला।

तिरंगा मार्च में यूपीए अध्यक्ष सोनिया गांधी, कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे भी शामिल हुए।

वेणुगोपाल ने लगाया लोकतंत्र को खत्म करने का आरोप- कांग्रेस सांसद केसी वेणुगोपाल ने कहा कि पूरी भाजपा और नरेंद्र मोदी सरकार लोकतंत्र को खत्म करने का काम कर रही है। पूरे सत्र में वे बस अडानी को बचाने में लगे थे। हम बस जेपीसी जांच की मांग कर रहे हैं। वे इस पर बात तक नहीं कर रहे हैं। हम इस मुद्दे को जनता के बीच लेकर जाएंगे।

किरेन रिजिजू ने कांग्रेस को घेरा- केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि कांग्रेस और उनके साथियों ने बहुत गलत तरीके से परेशान किया और सदन को चलने नहीं दिया। राहुल गांधी को लेकर कांग्रेस पार्टी और उसके साथियों ने जो किया है वो देश देख रहा है। कांग्रेस और उनके गिरोह मिलकर कोर्ट में दबाव डालने के लिए सूरत कोर्ट में जाकर जिस तरह जुलूस निकालकर कोर्ट के परिसर में गए, मैं इसका खंडन करना चाहता हूं।

दाजी धाम मंदिर में हनुमान जन्मोत्सव पर लगाया सवामन लड्डुओं का भोग

सांध्य प्रकाश संवाददाता ● भोपाल

राजधानी के रायसेन रोड के पास पटेल नगर स्थित दादाजी धाम मंदिर में सूर्योदय के समय हनुमान जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रात: 6 बजे से हनुमान जी का अभिषेक पूजन कर सवामन लड्डुओं एवं फल का भोग लगाया गया। इसके साथ ही सुंदरकांड, हनुमान चालीसा एवं भजन किया गया। महाप्रसाद वितरण किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में वर्धमान कॉलोनी, पटेल नगर एवं आसपास के क्षेत्र से श्रद्धालु शामिल हुये। इस अवसर पर प्रात: 4 बजे से रात्रि 10 बजे तक मंदिर के पट भक्तों के लिए खुले रहें।

वल्लभ नगर में धूमधाम से मनाया हनुमान जन्मोत्सव, चल समारोह निकाला

जय महाबली सेवा शिक्षा समिति द्वारा वल्लभ नगर में श्री हनुमान जन्मोत्सव पर हनुमान जी के मंदिर में वेद मंत्रों का उच्चारण कर हनुमान जी को सिन्दुर चोला चढ़ाया गया एवं सुंदरकांड पाठ का आयोजन भजन कीर्तन के साथ जागरण भी किया गया। समिति के अध्यक्ष नारायण सिंह ने बताया कि हनुमान जन्मोत्सव पर चल समारोह निकाला गया जिसमें युवतियों ने 101 कलश बैंड बाजे, डीजे, रथ बग्घी के साथ निकाली गई। जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु ने भाग लिया और भण्डारे का भी आयोजन किया गया। हर साल की तरह इस साल भी धूमधाम से हनुमान जी का जन्मोत्सव मनाया गया।

खेड़ापति छोला हनुमान को अर्पण की जाएगी 11 फ़ीट की गदा

भोपाल। पुराने शहर के कई धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रमों में अग्रणी भूमिका निभाने वाले संगठन श्री बाबा महाकाल सेवा संघ ने अपने वार्षिकोत्सव श्री हनुमान जन्मोत्सव की तैयारियां पूर्ण कर लीं हैं। संघ के अध्यक्ष रंजीत सिंह ने बताया कि हर साल की तरह हनुमान जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। श्री खेड़ापति हनुमानजी सरकार को अर्पित करेंगे 11 फीट की विशाल गदा और भव्य धर्म ध्वज। संगठन के वार्षिकोत्सव भव्य धर्म ध्वज व गदा समर्पण यात्रा की जानकारी देते हुए बताया कि, आगामी 6 अप्रैल गुरुवार को प्रेमनगर कालोनी स्थित दुर्गा मंदिर से सायं 4 बजे शोभायात्रा प्रारंभ होगी। प्रेमनगर कालोनी के मार्गों से भ्रमण करते हुए शोभायात्रा नवजीवन कालोनी से होकर छोला हनुमान मंदिर पर सम्पन्न होगी। संघ के अनुसार शोभायात्रा में 101 बालिकाओं, 251 महिलाओं सहित सैकड़ों लोगों की उपस्थिति रहेगी।

साधु वासवानी स्वशासी महाविद्यालय में वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित

संत हिरदाराम नगर। साधु वासवानी स्वशासी महाविद्यालय द्वारा शैक्षणिक गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं के लिये पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में विधायक रामेश्वर शर्मा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। बरकतउल्ला वि.वि. के कुलपति प्रो. एस.के जैन व विशेष अतिथि निर्मल रजनी, महाविद्यालय की एजूकेशनल सोसायटी के अध्यक्ष दयालदास डेटानी महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. ए.के. सिंह द्वारा कार्यक्रम की शुरूआत की गई। विद्यायक रामेश्वर शर्मा एवं कुलपति प्रो. एस.के जैन द्वारा महाविद्यालय का सर्वश्रेष्ठ छात्र पुरस्कार अजीत डेटानी मेमोरियल बेस्ट स्टूडेंट अवार्ड, बी.कॉम तृतीय वर्ष के छात्र शशांक खूबनानी को दिया गया। पुरस्कार की इस श्रंखला में प्रत्येक कक्षा के सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया गया। सांस्कृतिक गतिविधियों के विभन्न प्रतियोगिताओं में रंगोली, मेंहदी, क्विज़, अंताक्षरी, नृत्य, गायन व फेशन शो में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया।

हमारी कथनी और करनी में कोई फर्क नहीं होना चाहिए : बसंत चेलानी

संत हिरदाराम नगर। दीपमाला पागारानी संस्कार विद्यालय में नए सत्र 2023-24 का प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर विद्यार्थियों एवं अभिभावकों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्था के सचिव बसंत चेलानी, कोषाध्यक्ष चन्दर नागदेव एवं विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा माँ सरस्वती, भारत माता एवं संतजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर एवं दीप प्रज्वलन कर किया गया। इस अवसर पर संस्था के सचिव बसंत चेलानी ने विद्यार्थियों एवं अभिभावकों का स्वागत करते हुए कहा कि हम जो कहे वह करें हमारी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं होना चाहिए क्योंकि हम जो कहते है और करते है उसमें अन्तर होता है जो नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें रोज समय पर स्कूल आना चाहिए और पूरी यूनीफार्म में आना चाहिए।

घनश्याम कुशवाहा ने वार्ड 15 में मनाया भाजपा का स्थापना दिवस

भोपाल। वार्ड 15 में बुथ क्रमांक 128 पर भारतीय जनता पार्टी 43 वा स्थापना दिवस ,पूर्व पार्षद घनश्याम कुशवाहा के नेतृत्व में मनाया गया इस अवसर पर देवी प्रसाद रायकवार, चरण सिंह चौहान, शिव नारायण मेहर, धनराज साहू, गणेश जादव,हरी साहू, अरविंद लिटौरिया, मोनू कुशवाहा एव अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

सूचना का अधिकार अधिनियम का ऑनलाईन प्रशिक्षण 10 से

भोपाल । कलेक्टर अविनाश लवानिया ने भोपाल जिले के समस्त प्रशासकीय विभागों को निर्देशित किया है कि जिले के समस्त कार्यालयों को ई-सर्विस पोर्टल http://services.mp.gov.in पर ऑनबोर्ड ऑनलाईन कार्य किये जाने के संबंध में 10 अप्रैल से 17 अप्रैल तक ई-दक्ष केन्द्र जिला भोपाल के माध्यम से प्रशिक्षण का आयोजन किया गया है। इस प्रशिक्षण में संबंधित कार्यालय के कार्यालय प्रशासक, लोक सूचना अधिकारी, सहायक लोक सूचना अधिकारी तथा शाखा प्रभारी नियत तिथि अनुसार ई-दक्ष केन्द्र, कोलार नगर पालिका भवन द्वितीय तल, भोपाल में जानकारी सहित अनिवार्यत: उपस्थित होना सुनिश्चित करें। उल्लेखनीय है कि सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के अंतर्गत आवेदकों से प्राप्त होने वाले आवेदन पत्र ऑनलाईन के माध्यम से प्राप्त किये जाने के लिए मंत्रालय स्थित शासन के प्रशासकीय विभाग समस्त विभाग ई सर्विस पोर्टल पर ऑनलाईन हो चुके हैं ।

इंजीनियरिंग छात्रा का मल्टीनेशनल कंपनी में सिलेक्शन

सांध्य प्रकाश संवाददाता ●
भोपाल

राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय भोपाल की घटक संस्था यूनिवर्सिटी इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी के कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग विभाग की छात्रा यति वैष्णवी का सिलेक्शन मल्टीनेशनल कंपनी में 1 लाख पर मंथ इंटर्नशिप प्रोग्राम के तहत किया गया। सफलतापूर्वक इंटर्नशिप करने के उपरांत कंपनी द्वारा नियुक्ति पत्र प्रदान किया जाएगा, इस अवसर पर राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय सुनील गुप्ता सर ने यति की इस उपलब्धि के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित किए एवं कंपनी का इंटर्नशिप ऑफर लेटर दीया उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग विभाग के छात्र छात्रा नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं, एवं उन्होंने अपने उद्बोधन में बताया की विश्वविद्यालय का नाम रोशन देश एवं विदेशों में करें एवं साथ में मानव मूल्यों को ध्यान में रखते हुए मानव सेवा एवं मानवता के लिए कार्य किया जाना चाहिए जिससे हम समाज को कुछ ना कुछ अपने कार्यों द्वारा लौटा सकें द्य माननीय कुलपति जी ने अपने उद्बोधन में छात्रों से कहा की छात्र टेक्निकल क्लब बनाकर छात्र-छात्राएं अपने ज्ञान को साझा करें जिससे अन्य छात्रों का मोटिवेशन बड़े एवं ज्ञान अर्जित कर सकें। इस अवसर पर संचालक यूआईटी भोपाल प्रोफेसर सुधीर सिंह भदौरिया साहब ने बताया की यूनिवर्सिटी इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी के कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग विभाग के छात्र-छात्राओं का प्लेसमेंट कई नामी मल्टीनेशनल कंपनियों में हाईएस्ट सैलेरी पर हुआ है या यूनिवर्सिटी इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी के गौरव की बात है।

संगीता गुर्जर अखिल भारतीय गुर्जर महासभा की राष्ट्रीय सचिव नियुक्त

भोपाल। अखिल भारतीय गुर्जर महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष कामिनी गुर्जर द्वारा संगीता गुर्जर भाटी को अखिल भारतीय गुर्जर महासभा का राष्ट्रीय सचिव नियुक्त किया है। संगीता गुर्जर अखिल भारतीय गुर्जर महासभा के पूर्व अध्यक्ष स्व. आरती भाटी की पुत्रवधु है संगीता गुर्जर के राष्ट्रीय सचिव बनने पर मध्य प्रदेश महासभा के प्रदेश अध्यक्ष राजेंद्र गुर्जर एवं महिला इकाई की प्रदेश अध्यक्ष आरती पटेल एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अंजना शुभकामनाएं दी है संगीता गुर्जर ने कहा कि उनकी कोशिश होगी कि गुर्जर समाज की सभी महिलाएं आत्मनिर्भर बनें।

भोजपुरी महोत्सव की तैयारियां जोरो पर

16 अप्रैल को एमबीएम में होगा महोत्सव

संत हिरदाराम नगर। भोपाल में भोजपुरी महोत्सव का आयोजन 16 अप्रैल को भोपाल के एमबीएम कॉलेज ग्राउंड मैदान में होने जा रहा है। जिसकी तैयारियां जोर शोर से की जा रही है। इस महोत्सव को लेकर बैठक लगातार हो रही है। भोपाल जिला भाजपा के महामंत्री एवं महापौर परिषद के सदस्य रविंद्र यति, अंजनी कुमार सिंह, सांसद प्रतिनिधि दिनेश कुमार मिश्रा, गंगा सागर यादव, लक्ष्मण गिरी, रमेश यादव, पुरुषोत्तम सिंह आदि प्रमुख लोगों के नेतृत्व में बैठकों का दौर जारी है। महोत्सव को लेकर बैठक रखी गई। बैठक में बताया गया कि बड़े स्तर पर भोजपुरी महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है जिसमें बिहार के भोजपुरी गायक गोलू राजा एवं उत्तर प्रदेश पूर्वांचल की गायिका अनुपमा यादव की उपस्थिति में महोत्सव में रंगारंग सांस्कृतिक भोजपुरी गीतों की प्रस्तुति दी जाएगी। जिसमें भोजपुरी व्यंजन के साथ मेले का भी आयोजन किया जा रहा है जिसमें भोपाल के आसपास के मंडीदीप, रायसेन, विदिशा, सीहोर क्षेत्र के लोगों को खासतौर से आमंत्रित किया गया है।

स्विगी ने बिलबोर्ड्स लगाकर मनाया व्यंजनों के प्रति भोपाल की चाहत का जश्न

भोपाल। भारत के अग्रणी ऑन डिमांड डिलीवरी प्लेटफॉर्म स्विगी ने व्यंजनों के प्रति भोपाल की चाहत का जश्न मनाने के लिए विशेष तरीका अपनाया है इसके लिए पूरे शहर में बिलबोर्ड्स लगाए गए हैं इनमें शहर में सबसे ज्यादा आर्डर की जाने वाली डिश और शहर के टॉप डिलीवरी पार्टनर्स को प्रदर्शित किया गया है पूरे शहर में लगे इन अनूठे बिलबोर्ड में शहर के कुछ सबसे खास ऑर्डर ट्रेंड की झलक दिखती है मुंह में पानी ला देने वाले चिकन ट्विस्टर से लेकर पसंदीदा दक्षिण भारतीय व्यंजन मसाला डोसा तक इन बिलबोर्ड में न केवल टॉप डिश प्रदर्शित की गई हैं, बल्कि उन सर्वश्रेष्ठ रेस्टोरेंट के बारे में भी बताया गया है जिन्हें यहां आपको आजमाना चाहिए भोपाल की खानपान की संस्कृति को बढ़ावा देने के साथ-साथ स्विगी यहां अपने हीरो डिलीवरी पार्टनर्स में शामिल श्री सुरेश बैरागढ़ की सफलता का जश्न भी मना रही है। सुरेश कहते हैं स्विगी से जुड़ना मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण अनुभव रहा है। स्विगी ने मुझे ठीक आय प्राप्त करने और अपने परिवार का सहयोग करने में सक्षम बनाया। महामारी के दौरान स्विगी ने मेरी मदद की जब मेरे पास आय का कोई वैकल्पिक माध्यम नहीं बचा था। इंश्योरेंस और पढ़ाई का खर्च देने जैसे स्विगी से मिलने वाले लाभों ने मुझे प्रोत्साहित किया। मैं स्विगी के साथ लंबे समय तक जुड़े रहना चाहता हूं।

सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले रेस्टोरेंट में शुमार रेस्टोरेंट के मालिक सागर गैरे ने कहा स्विगी से जुड़ने के बाद से हमारी बिक्री और भोपाल में हमारी पहुंच बढ़ी है। हम अपने क्षेत्र एवं आसपास के क्षेत्रों में नए ग्राहकों को सेवा देने को लेकर उत्साहित हैं। स्विगी ने हमें अपना कारोबार बढ़ाने और नए ग्राहकों तक पहुंचने में मदद दी है। महामारी के दौरान अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए सुरेश के समक्ष संघर्ष की स्थिति आ गई थी। उसी दौरान वह डिलीवरी एक्जीक्यूटिव के रूप में स्विगी से जुड़े। तब से वह टीम का हिस्सा बन गए हैं और भोपाल में सबसे ज्यादा ऑर्डर डिलीवर करते हुए स्विगी के टॉप डिलीवरी पार्टनर बन गए हैं।

हम जैसा सोचेंगे वैसा ही हमारा नजरिया होगा : सिद्धभाऊ

संत हिरदाराम नगर। संसार भावनाओं का खेल है भावनाएं लौट कर आती है। जैसी भावना हम दूसरों के लिए रखेंगें वैसी ही भावना हमें लौट कर मिलेगी। ये विचार शहीद हेमू कालानी ऐज्युकेषनल सोसायटी के अध्यक्ष श्रद्धेय सिद्ध भाऊजी ने संत हिरदाराम प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग विज्ञान महाविद्यालय के सत्र 2022-23 की छात्राओ के उन्मुखीकरण कार्यक्रम में व्यक्त किए। माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन के साथ कार्यक्रम का षुभारंभ हुआ। श्रद्धेय सिद्ध भाऊजी ने छात्राओं से ही कार्यक्रम का षुभारंभ करवाया। प्राचार्य डॉ. हेमांषु षर्मा ने अपने स्वागत उद्बोधन में प्राकृतिक चिकित्सा के महत्व को समझाते हुए कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा के तथ्य मेडिकल साइंस के द्वारा प्रमाणित है। प्राकृतिक चिकित्सा एक जादुई षक्ति है जिसे सही तरीके से समझने की जरूरत है। उन्होने प्राकृतिक चिकित्सा की तकनीकियों को बताते हुए कहा कि जब जागो तभी सबेरा है हमें इस लौ को जलाए रखना होगा। संस्था के मेनेजिंग डॉयरेक्टर श्री हीरो ज्ञानचंदानी जी ने अपने उद्बोधन में मेडिकल प्रोफेषन को सबसे

संत हिरदाराम प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय में हुआ उन्मुखीकरण कार्यक्रम

अच्छा प्रोफेषन बताते हुए कहा कि ऋषिमुनि जो तपस्या करते है उन्हे ईष्वर के दर्षन हो यह जरूरी नही है पर जो डॉक्टर सच्चे मन से रोगी की सेवा करे उसे ईष्वर के दर्षन जरूर होते हैं। धन तो जितना किस्मत में हैं वह मिलता ही है पर सेवा किस्मत से मिलती है। परम श्रद्धेय श्री सिद्धभाऊजी ने श्री राम एवं रावण के चरित्र की तुलना करते हुए कहा कि रावण तो प्रकान्ड पंडित एवं षिवजी का अनन्य भक्त था सोने की लंका का राजा था एवं श्रीराम साधरण व्यक्ति एवं बनवासी थे फिर भी विजय श्री रामजी की हुई क्यो? रावण को अहंकार के ग्रसित एवं चरित्रहीन बताया तथा श्रीराम को धैर्यवान सतपुरूष एवं चरित्रवान व्यक्ति की संज्ञा दी। भाऊजी ने अपने उदबोधन में कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा एक चरित्रवान व्यक्ति बनाती है एवं करूणा जगाती है। कृतज्ञता का भाव पषुओं में ज्यादा होता है क्योकि उनका छठी इंद्रिया हमेषा जागृत रहती है। इसे उन्होने कहानी के माध्यम से भी समझाया। इंसान कृतज्ञता का भाव भूल जाते है बड़े भाग्य से मनुष्य योनि मिलती है इस योनि का हमें सदुपयोग करना चाहिए एवं दूसरों के प्रति हमेषा कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए। हम जैसा सोचेगे वैसा ही हमार नजरिया होगा इसलिए हमेषा अपनी सोच को सकारात्मक रखना चाहिए क्योकि जैसा हमारा कर्म होगा वैसा ही हमे फल आज नही तो कल निष्चित रूप से मिलेगा। जो हम ऑखो से देखते है कानों से सुनते है एवं पढ़ते है वह ही विचार बन जाते है। गलत बातों कों न देखना न सुनना ना ही पढ़ना चाहिए। निंदा करने से हमारे पुण्य चले जाते है। सबका ध्यान रखना भगवान का काम है जो बुरा सोचता एवं करता है उसका कभी भला नही हो सकता। जीवन में माता-पिता का स्थान सर्वोपरि है माता-पिता से बढ़कर किसी का स्थान ही होता। तत्काल प्रतिक्रिया व्यक्त करने वाले अपने परम हितैषी खो देते है। इसीलिए तत्काल प्रतिक्रिया से सदैव बचे। गिरते है जब ख्याल तो गिरता है आदमी। जिसने इन्हें संभाल लिया वह संभल गया। इसीलिए हमें दूसरों के दोष देखने का अधिकार नही है दोष देखने से पहले हमें स्वयं को देखना चाहिए। परम श्रद्धेय सिद्ध भाऊजी के उद्बोधन के पष्चात् सभी छात्राओं ने अपने परिचय के साथ उन्होनें क्या सेवा कार्य अपने जीवन में किए तथा परम सत्ता ईष्वर के प्रति उनमें क्या भावना है व्यक्त की। कई छात्राओं ने अपनी सुरीली आवाज में भजन सुनाकर कार्यक्रम को संगीतमय बना दिया। अंत में परम श्रद्धेय सिद्ध भाऊजी ने छात्राओं को उपहार स्वरूप किताबों से भरा बैग देकर उनका उत्साह वर्धन किया। कार्यक्रम का कुषल संचालन श्रीमती प्रमिता दुबे परमार ने किया।

राजधानी में धूमधाम से मनाया जा रहा हनुमान जन्मोत्सव, मंदिरों में सुबह से भीड़

गुफ़ा मंदिर में हनुमान जी का सहस्त्रधारा अभिषेक कर किया सिंदूर चोला अर्पण

सांध्य प्रकाश संवाददाता ● भोपाल

हनुमान जयंती उत्साह मनाई जा रही है। हनुमान मंदिर में धार्मिक आयोजन किए जा रहे हैं। प्रात: 6 बजे गुफ़ा मंदिर धाम भोपाल के श्री मंहत रामप्रवेश दास जी महाराज के सानिध्य में वैदिक ब्राह्मणों द्वारा श्री हनुमान जी का सहस्त्रधारा अभिषेक सिंदूर चोला अर्पण कर पूजन की गई। शाम को 7 बजे गुफा मंदिर में निरन्तर 31 मार्च 1999 से प्रारम्भित अंखड श्री रामचरितमानस पाठ जो की पूर्व मंहत साकेतवासी चंद्रमादास त्यागी द्वारा प्रारम्भ की हुई वहां पर पूजन कर श्री बूढ़े हनुमान महाराज की महाआरती होगी उसके उपरांत सामूहिक श्री हनुमान चालीसा पाठ होगा तथा प्रसादी वितरण किया जायेगा। सुबह गुफ़ा मंदिर में विराजे हनुमान जी का आशीर्वाद लेने सांध्यप्रकाश के प्रधान संपादक भरत पटेल, पूर्व महापौर आलोक शर्मा, दीपक लालचंदानी, विष्णु बंसल, पार्षद अशोक मारण, रमाकांत शुक्ला, राकेश यादव डब्बू पहुंचे।

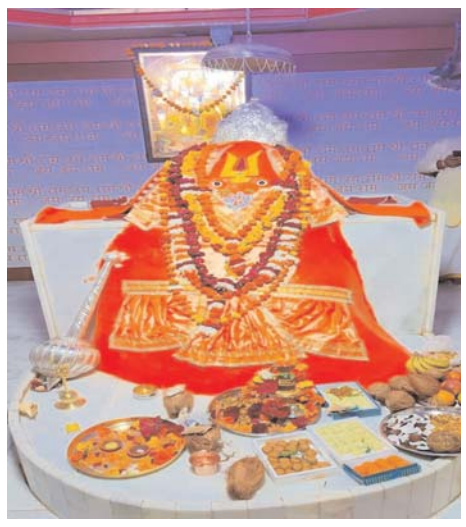

हनुमान जन्मोत्सव पर लालघाटी से निकला भव्य चल समारोह

भोपाल। हनुमान जन्मोत्सव के अवसर पर लालघाटी स्थित हनुमान मंदिर से चल समारोह निकाला गया चल समारोह के अवसर पर गुफा मंदिर के महंत रामप्रवेश दास जी महाराज समस्त विश्व कल्याण के लिए हनुमान जी महाराज से प्रार्थना की इस अवसर पर बड़ी संख्या में माताएं केरला साड़ी वस्त्र धारण किए हुए थी एवं युवा हाथों में झंडे लेकर चल रहे थे इस भव्य चल समारोह का लालघाटी गुफा मंदिर से रास्ते में विभिन्न जगहों पर लोगों ने फूल बरसा का स्वागत किया मां अन्नपूर्णा भोजनालय पर पंडित प्रियेश दुबे के नेतृत्व में बड़ी संख्या में लोगों ने फूल बरसा कर चल समारोह का स्वागत किया शैलेंद्र ने मोनू ने बताया कि चल समारोह का 23 वां वर्ष है समारोह में हनुमान जी महाराज शोभा यात्रा का बहुत श्रद्धा से पूजा करते हैं वह बहुत आनंद से सभी लोग हैं सम्मिलित होते इस अवसर पंडित ओंकार बाबा नीलमणि दुबे घनश्याम शर्मा सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु सम्मिलित हुए।

हिंदी भवन में आयोजित कार्यक्रम में हम विक्रम संस्था ने वेदप्रताप वैदिक को दी श्रद्धांजलि

सांध्य प्रकाश संवाददाता ●
भोपाल

सुविख्यात पत्रकार, लोकप्रिय लेखक और वक्ता तथा दृढ़-प्रतिज्ञ हिंदीसेवी डॉ. वेदप्रताप वैदिक को श्रद्धांजलि देने के लिए आज शाम हिंदी भवन में आयोजित बड़ी सभा में सभी वक्ताओं ने एक स्वर से कहा कि वैदिक जी द्वारा हिंदी के प्रसार के लिए प्रारंभ किए गए कार्यों को तेज़ी से आगे बढ़ाने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम का आयोजन रचनात्मक संस्था हम विक्रम ने किया । सभी ने वैदिक जी के तटस्थ लेखन और देश एवं शेष विश्व में हिंदी को वाजिब स्थान दिलाने के लिए उनके द्वारा किए गए कार्यों को रेखांकित किया ।उन्होंने अंतरराष्ट्रीय समुदाय में वैदिक जी की पैठ तथा दुनिया के अनेक शासनाध्यक्षों से उनके व्यक्तिगत संबंधों की क्षेपक कथाओं का भी उल्लेख किया ।इस मौक़े पर डॉ. वैदिक के अनुज श्वेतकेतु वैदिक विशेष रूप से संबोधित करने इंदौर से भोपाल आए थे ।वक्ताओं में मप्र योग आयोग के अध्यक्ष वेदप्रकाश शर्मा, पूर्व केन्द्रीय मंत्री-द्वय असलम शेर खाँ और सुरेश पचोरी, पूर्व सांसद एवं मानस भवन के अध्यक्ष रघुनन्दन शर्मा, विधायक पीसी शर्मा, हिंदी भवन के संचालक कैलाश पंत, भोपाल नगर निगम के अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय सचिव और प्रवक्ता बृजमोहन श्रीवास्तव, एड. बृज किशोर साँघी, वरिष्ठ पत्रकार लज्जा शंकर हरदेनिया, राजेन्द्र शर्मा और पीयूष बबेले (दिल्ली) शामिल हैं। कार्यक्रम का संचालन कवि और लेखक पंकज पाठक ने किया। कार्यक्रम में डॉ. वैदिक के साथ ही समाचार पत्र संचालक संघ (इलना) के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, प्रदेश के पूर्व रोटरी गवर्नर तथा वरिष्ठ पत्रकार ललित श्रीमाल को भी कुछ क्षण का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। अंत में चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में लेखक, पत्रकार, बुद्धिजीवी, जनसंपर्क विभाग के पूर्व अधिकारियों सहित समाज के विभिन्न वर्गों के गणमान्य अतिथि बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

देश हित में महत्वपूर्ण योगदान रहा बाबू जगजीवन राम का: सुरेश पचौरी

सांध्य प्रकाश संवाददाता ● भोपाल

बाबू जगजीवन राम की जयंती पर कांग्रेसजनो ने उन्हें पुष्पांजलि अर्पित देश की आजादी के पुरोधा, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, देश के पूर्व उप प्रधानमंत्री रहे बाबू जगजीवन राम की आज 115 वीं जयंती पर प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय के सभागार में कांग्रेसजनों उनके चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पित कर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की, उनका पुण्य स्मरण किया। पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश पचौरी ने कहा कि बाबू जगजीवन राम ने देश हित में अनेकों सराहनीय कार्य किये, अपने उत्तरदात्यिों को बड़े ही तरीके से निभाया, हमेशा सर्वहारा वर्ग के हितों की रक्षा की।

इस अवसर पर प्रदेश कांग्रेस के उपाध्यक्षत्रय राजीव सिंह, प्रकाश जैन, महेन्द्र जोशी, जे.पी. धनोपिया, डॉ. महेन्द्र सिंह चौहान, जितेन्द्र मिश्रा, विक्रांत भूरिया, महामंत्री चंद्रिका प्रसाद द्विवेदी, दीपचंद यादव, अरूण श्रीवास्तव, पवन पटेल, नरेन्द्र यादव, गीता जाटव, समीर खान सहित बड़ी संख्या में कांग्रेसजन उपस्थित थे।

ऊर्जा मंत्री तोमर ने लाड़ली बहना योजना के शिविरों का किया निरीक्षण

भोपाल। ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने उप नगर ग्वालियर में मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना के ई-केवायसी एवं फार्म भरने के लिए लगाए गए अतिरिक्त शिविरों का निरीक्षण किया एवं शिविर में आई बहनों द्वारा भरे जा रहे फार्मों की अद्यतन स्थिति जानी। उन्होंने स्वयं बहनों के फार्म भरे। साथ ही संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि शिविर में आने वाली बहनों को किसी भी प्रकार की परेशानी न हो, सुनिश्चित किया जाए। ऊर्जा मंत्री ने कहा कि विशेष शिविर का लाभ ज्यादा से ज्यादा बहनों को मिले इसके लिए जिन वार्डों में शिविर लगाये जा रहे हैं वहाँ प्रचार-प्रसार भी हो, जिससे सभी पात्र बहने योजना के फार्म भर सकें। उन्होंने कहा कि महिला सशक्तिकरण के लिये लागू की गई मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना के फार्म भरने में बहनों को किसी भी प्रकार की परेशानी न हो इसके लिए अतिरिक्त शिविर लगाए जा रहे हैं। उन्होंने शिविर में बहनों के लिए बैठनें और पेयजल के साथ ही नास्ते की व्यवस्था भी की। ऊर्जा मंत्री ने कहा कि यह मुख्यमंत्री की महत्वाकांक्षी योजना है। इसमें 10 जून से सभी बहनों के खाते में एक हजार रूपये डाले जाएंगे। शिविर 30 अप्रैल तक इसी प्रकार निरंतर गति से संचालित होते रहेगें।

भोपाल। 23 वीं मासिक पुण्यतिथि पर विजेश लुणावत स्मृति फ़ाउंडेशन द्वारा जयप्रकाश शासकीय अस्पताल में समस्त वार्डों और ओपीडी के लगभग 500 मरीज़ों को फल वितरण किए गए। इस दौरान सिवल सर्जन डॉ. राकेश श्रीवास्तव, डॉ. उपाध्याय व स्टाफ़ ने सहयोग किया।

नये पंपों से शीघ्रता से लाइन जोड़कर जलप्रदाय शुरू करने के निर्देश

अधिकारी योजना बनाकर प्रस्ताव प्रस्तुत करे : निगम आयुक्त

भोपाल । निगम आयुक्त के.वी.एस. चौधरी ने जोन क्रमांक 2 वीआईपी रोड करबला स्थित अमृत परियोजनान्तर्गत निर्मित इन्टक वेल पम्प हाउस में पुराने पम्पों के स्थान पर स्थापित किये जा रहे नये पम्प स्थापित करने का कार्य के साथ ही शीघ्रता से लाईन जोड़कर नये पम्पों से जलप्रदाय प्रारंभ करने के निर्देश दिए। करबला पम्प हाउस में स्थापित पम्प लगभग 35-40 वर्ष पुराने हो चुके हैं जिनसे पानी भी कम मात्रा में मिलता है और बिजली की खपत भी ज्यादा होती है। नये पम्प स्थापित होने से अधिक मात्रा में जलप्रदाय किया जा सकेगा साथ ही बिजली की खपत भी कम होगी। करबला पम्प हाउस से रॉ वाटर ईदगाह हिल्स स्थित फिल्टर प्लांट में भेजा जाता है जहां से जोन क्रमांक 02, 03 एवं 05 के क्षेत्रों में जलप्रदाय किया जाता है।

निगम आयुक्त श्री चौधरी ने जोन क्रमांक 17 के अंतर्गत रूसल्ली में पुरानी क्षतिग्रस्त पानी की टंकी के स्थान पर रिक्त भूमि के समुचित उपयोग हेतु योजना बनाकर प्रस्ताव प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। निगम आयुक्त श्री चौधरी ने 80 फिट रोड करोद मंडी के पास विश्वकर्मा नगर फेस-02 में तोड़ी गई पुरानी क्षतिग्रस्त पानी की टंकी से रिक्त हुई भूमि के समुचित उपयोग हेतु योजना बनाकर प्रस्ताव प्रस्तुत करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए।निरीक्षण के दौरान अपर आयुक्त शाश्वत मीणा, अधीक्षण यंत्री श्री उदित गर्ग सहित निगम के अन्य अधिकारी मौजूद थे।

भारतीय संस्कृति के सभी पर्व शिक्षा देते है: योग गुरु महेश अग्रवाल

भोपाल। हनुमान जयंती के अवसर पर आदर्श योग आध्यात्मिक केंद्र स्वर्ण जयंती पार्क कोलार रोड़ भोपाल के संचालक योग गुरू महेश अग्रवाल ने बताया कि योग साधकों ने इस अवसर पर सामूहिक योग साधना करते हुए सभी के जीवन में सुख शान्ति अच्छा स्वास्थ्य एवं आनंद रहें ऐसी प्रार्थना की एवं हार्दिक शुभकामनायें दी । इस अवसर पर योग गुरु अग्रवाल ने बताया अंजनी पुत्र हनुमान जी के जीवन से कुशल प्रबंधन के साथ मन, कर्म और वाणी पर कैसे संतुलन रहें सीखा जा सकता हैं। ज्ञान, बुद्धि, विद्या और बल के साथ ही उनमें विनम्रता भी अपार थी। सही समय पर सही कार्य करना और कार्य को अंजाम तक पहुंचाने का उनमें चमत्कारिक गुण था। उनमें कार्य का संपादन करने की अद्भुत क्षमता थी जो आज के प्रबंधक और कर्मठ लोगों को सीखना चाहिए। सीखने की लगन, कार्य में कुशलता और निपुणता, मूल्यों और प्रतिबद्धता के साथ सही योजना, दूरदर्शिता , नीति कुशल हनुमानजी प्रबंधन की यह सीख देते हैं कि अगर लक्ष्य महान हो और उसे पाना सभी के हित में हो तो हर प्रकार की नीति अपनाई जा सकती है साहस हनुमानजी में अदम्य साहस है। वे किसी भी प्रकार की विपरीत परिस्थितियों से विचलित हुए बगैर दृढ़ इच्छाशक्ति से आगे बढ़ते गए।

एम्स के पैथोलॉजी एवं लैब मेडिसिन विभाग द्वारा जागरूकता कायक्रम 8 को

भोपाल। पैथोलॉजी एवं लैब मेडिसिन विभाग दिनांक 08-04-23 को सरदार वल्लभ भाई पटेल भवन में सुबह 9.30 बजे से शाम 5.00 बजे तक ह्वक्रपर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने जा रहा है । यह कार्यक्रम पैथोलॉजी और लैब मेडिसिन विभाग द्वारा परीक्षण और अंशांकन प्रयोगशालाओं के लिए राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड (एनएबीएल), भारतीय गुणवत्ता परिषद के एक घटक बोर्ड के सहयोग से आयोजित किया जाता है । यह प्रयोगशाला नैदानिक परीक्षणों में शामिल चिकित्सा पेशेवरों, प्रयोगशाला तकनीकी कर्मचारियों को आईएसओ 15189 मानकों के बारे में संवेदनशील बनाता है । श्री पंकज जौहरी, एनएबीएल निदेशक, सुश्री गायत्री, संयुक्त निदेशक एनएबीएल और डॉ. मिताली गुप्ता, सहायक निदेशक एनएबीएल प्रमुख वक्ता होंगे । इस कार्यशाला से अधिक से अधिक प्रयोगशालाओं को प्रक्रिया की जानकारी होने के बाद मान्यता मिल सकेगी, जिससे मरीजों को अधिक से अधिक लाभ होने वाला है । आवेदन प्रक्रिया, आईएसओ 15189ः 2022 मानकों, प्रवेश स्तर की एनएबीएल मान्यता और मान्यता के लाभों के बारे में जानकारी प्राप्त करना फायदेमंद होगा ।

सिंगल यूज प्लास्टिक वस्तुओं पर प्रतिबंध जोन स्तर पर टॉस्क फोर्स करेगी कार्रवाई

सांध्य प्रकाश संवाददाता ● भोपाल

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा प्रतिबंधित सिंगल यूज प्लास्टिक वस्तुओं के प्रतिबंधात्मक नियमों के अनुपालनार्थ स्थानीय निकायों के साथ विशेष निरीक्षण अभियान चलाने के संबंध में बैठक आहूत की गई जिसमें सिंगल यूज प्लास्टिक आईटम्स को पूरी तरीके से प्रतिबंधित करने हेतु स्पॉट फाईन, जप्ती आदि की कार्यवाही सख्ती के साथ करने हेतु जोन स्तर पर टॉस्क फोर्स बनाने के निर्देश दिए गए साथ ही कार्यवाही हेतु 04 नोडल अधिकारी भी नियुक्त किए गए है। बैठक में सिंगल यूज प्लास्टिक, पॉलीथीन, स्ट्रा, थर्माकॉल आदि के विक्रेताओं को भी सहयोग करने एवं बाजार में उपलब्ध उपरोक्त वस्तुओं के विकल्प के उपयोग हेतु नागरिकों को प्रेरित करने की समझाइश देने, सिंगल यूज प्लास्टिक इण्डस्ट्रीज व थोक विक्रेताओं पर भी सख्ती से कार्यवाही हेतु निर्देशित किया गया। इस हेतु जोन स्तर पर टॉस्क फोर्स बनाने के निर्देश दिए गए हैं साथ ही कार्यवाही हेतु चार प्रभारी स्वास्थ्य अधिकारियों को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है बृजेन्द्र गुप्ता मो. 9424499813, रविकांत औदिच्य मो. 9424499801, राकेश शर्मा मो. 9424499814, राजीव सक्सेना मो. 9424499821 ये नोडल अधिकारी योजना बनाकर कार्य करेंगे। बाजार में सिंगल यूज प्लास्टिक के विकल्प उपलब्ध हैं उन्हें उपयोग करने के लिए व्यापारियों एवं आमजन को प्रेरित करने का कार्य भी करेंगे। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा प्रतिबंधित सिंगल यूज प्लास्टिक वस्तुओं के प्रतिबंधात्मक नियमों के अनुपालन में स्थानीय निकायों के साथ विशेष निरीक्षण अभियान चलाने के संबंध में आहूत बैठक में यह निर्देश दिये गये। बैठक में सिंगल यूज प्लास्टिक, पॉलीथीन, स्ट्रा, थर्माकॉल आदि विक्रेताओं को भी सहयोग करने एवं बाजार में उपलब्ध उपरोक्त वस्तुओं के विकल्प के उपयोग हेतु नागरिकों को प्रेरित करने की समझाइश देने, सिंगल यूज प्लास्टिक इंडस्ट्रीज व थोक विक्रेताओं पर भी सख्ती से कार्यवाही करने के निर्देश दिए।

हेल्पलाइन की शिकायतों का निराकरण प्राथमिकता के आधार पर करें: महापौर

भोपाल । महापौर ने निर्देशित किया है कि महापौर हेल्पलाइन पर प्राप्त शिकायतों का निराकरण प्राथमिकता के आधार पर किया जाए और नागरिकों को अनावश्यक रूप से कठिनाईयों का सामना न करना पड़े। महापौर मालती राय ने उक्त निर्देश महापौर हेल्पलाईन पर प्राप्त शिकायतों एवं उनके निराकरण की साप्ताहिक समीक्षा करते हुए निगम अधिकारियों को दिये। महापौर मालती राय ने बुधवार को महापौर हेल्पलाइन की समीक्षा स्मार्ट सिटी स्थित कंट्रोल रूम में की। समीक्षा के दौरान महापौर ने हेल्पलाईन पर प्राप्त शिकायतों एवं उनके निराकरण की कार्यवाही का कम्प्यूटर पर अवलोकन किया और अनेक शिकायतकर्ताओं से दूरभाष पर शिकायतों/समस्याओं के निराकरण के संबंध में फीडबैक भी लिया। महापौर ने स्मार्ट सिटी द्वारा संधारित स्ट्रीट लाईट के अलावा जलापूर्ति एवं सीवेज की समस्याओं के निराकरण में विलम्ब पर नाराजगी व्यक्त करते हुए संबंधित अधिकारियों से दूरभाष पर चर्चा की और तत्पश्चात कार्यालय में बुलाकर भी महापौर हेल्प लाईन से प्राप्त शिकायतों को प्राथमिकता के आधार पर निराकृत करने के निर्देश दिए। समीक्षा के दौरान महापौर श्रीमती राय को अवगत कराया गया कि हेल्पलाइन पर माह मार्च में 1763 शिकायतें प्राप्त हुई जिनमें से 99 प्रतिशत अर्थात 1748 शिकायतों का संतुष्टिपूर्ण एवं त्वरित गति से निराकरण कर दिया गया है इसी प्रकार अप्रैल माह में वर्तमान तक 117 शिकायते दर्ज की गई जिनमें से 113 शिकायतों का संतुष्टिपूर्ण निराकरण कर दिया गया है।

सचिव की लापरवाही से नहीं हो रहे पंचायत में कार्य

पिपरी के सरपंच ने सचिव को हटाने लिखा पत्र

अटेर / भिंड। जिले की अटेर जनपद की ग्राम पंचायत पीपरी में पदस्थ सचिव अशर्फीलाल के द्वारा पंचायत के कार्यों में रुचि न लेना तथा ग्राम पंचायत के रिकॉर्ड की जानकारी न देने पर कार्यवाही करनेकी मांग सरपंच के द्वारा की गई है। अभितकब्तो यही सुनने में आता रहा है कि सरपंच और सचिव दोनो मिलकर ग्रामीणों के अधिकारों का हनन करते रहे हैं साथ की ग्राम के विकास के लिए योजना की राशि का फर्जी तरीके से गबन कर सरकार को लाखों रुपए की हानि पहुंच रहे हैं। लेकिन यहां अटेर जनपद की पिपरी पंचायत में दोनो की आपसी सामंजस्य नहीं है। जिससे जहां पंचायत के विकास कार्य प्रभावित हो रहे हैं वहीं दोनो को कमाई का मौका नहीं मिल पा रहा है । इसी बजाय से सरपंच ने सचिव को हटाने के लिए संबंधित अधिकारी को पत्र लिखा है । शिकायती पत्र में ग्राम पंचायत पीपरी में पदस्थ सचिव अशर्फी लाल द्वारा पंचायतों के कार्यों में रुचि नहीं ली जा रही है और पूर्व के कार्य भी अधूरे पड़े हुए हैं. किसी प्रकार की जानकारी से बच रहे हैं। पूर्व में वर्ष 2010 से 2015 तक मैं सरपंच रही थी. उस समय के मेरे द्वारा कराये गये कार्य पूर्ण हो गये थे. वेल्यूशन भी हो गया था, जिसकी माप पुस्तिका (एम.बी.) भी सचिव के द्वारा मुझे जानकारी नहीं दी जा रही है, न ही ग्राम पंचायत में उपस्थित रहते हैं । पंचायत में किसी भी प्रकार का कार्य शुरू नहीं हुआ । सरकार की योजनायें लोगों तक नहीं पहुंच रही हैं, कार्यों में विलम्ब का कारण सचिव बना हुआ है। कई बार निवेदन के बाद भी कोई तवज्जो नहीं दी जाती है। सरकार द्वारा चलाये जा रहे जनकल्याणकारी शिविर में भी उपस्थित नहीं हुए हैं। सचिव कवकहाना हैबकी मेरा कोई कुछ नहीं बिगड़ सकता । अगर मेरा ट्रान्सफर करा सकते हो या सस्पेण्ड करा सकते हो तो करा दीजिए। मैंने हमेशा ऐसे ही नौकरी की है। सरपंच आरती ने वरिष्ठ अधिकारियों से ग्राम पंचायत पीपरी में पदस्थ सचिव अशर्फीलाल कार्यवाही के साथ ही अन्य किसी सचिव पदस्थ करने कीमांग की है। जिससे पंचायत केन विकास कार्य आरंभ हो सकें।

शिकायत की जांच करें: सचिव द्वारा शासन द्वारा संचालित हितग्राही मूल योजनाओं संचालन हेतु समय-समय पर आवश्कयतानुसार आते-जाते रहते है और ग्रामीणजनों को लाभ दिलवाते है। इस संबंध में शिकायत कर्ता को अवगत करा दिया गया है। शिकायत फॉर्स क्लोज किया जाना प्रस्तावित है।मुख्य कार्य पालन अधिकारी जनपद पंचायत के प्रतिवेदन के आधार पर मुख्य कार्य पालन अधिकारी जिला पंचायत की अनुशंसा एवं कलेक्टर महोदय के अनुमोदन(16-03-2023) पर शिकायत फोर्स क्लोज की जा रही हैं

मुख्य कार्य पालन अधिकारी जनपद पंचायत के प्रतिवेदन के आधार पर शिकायत के जाँच करने के लिए फोर्स क्लोज कर दी गई है। इस जाँच के दौरान शिकायत कर्ता द्वारा दी गई जानकारी और सबूतों की सत्यता की जाँच की जाएगी। अगर शिकायत सत्य सिद्ध होती है, तो संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कार्यवाही की जाएगी।

स म्पा द की य

प्रेस की स्वतंत्रता...!

लोकतांत्रिक देश मजबूती से चलता रहे, इसके लिए प्रेस की स्वतंत्रता जरूरी है। लोकतांत्रिक समाज में इसका किरदार बहुत अहम होता है। यह देश की कार्यप्रणाली पर प्रकाश डालता है। प्रेस का कर्तव्य सत्ता को सच बताना है और नागरिकों के समक्ष कड़वी सच्चाई को रखकर लोकतंत्र को सही दिशा में ले जाने वाले फैसले लेने में उन्हें सक्षम बनाना है।

यह कहना है देश की सर्वोच्च अदालत का। परंतु क्या वास्तव में ऐसा हो रहा है। ये तो न्यायालय ने सरकार के एक निर्णय पर टिप्पणी की है, लेकिन क्या इस टिप्पणी का कोई असर होगा? यह भविष्य बताएगा, लेकिन जो कहा है, वह आज के वातावरण में बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसके साथ ही एक और अहम मुद्दे पर न्यायालय ने अपनी राय रखी है। खुलकर कहा है– राष्ट्रीय सुरक्षा का मुद्दा लोगों को अधिकार

छीनने के लिए नहीं उठाया जा सकता है। गृहमंत्रालय ने इस मामले में मनमाने ढंग से यह मुद्दा उठाया है। हम सरकार को ऐसा कदम नहीं उठाने दे सकते, जिससे प्रेस हर हाल में उसे समर्थन करे। सरकार की आलोचना किसी टीवी चैनल का लाइसेंस रद्द करने का अधिकार नहीं हो सकता है।

पहले बात करते हैं कि यह टिप्पणी क्यों की गई। असल में एक मलयालम न्यूज चैनल पर राष्ट्रविरोधी खबरें प्रसारित करने का आरोप लगा था। सरकार ने उस पर प्रतिबंध लगा दिया। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को उस चैलन पर लगे केंद्र सरकार के बैन को हटा दिया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा– सरकार की नीतियों और कदमों की आलोचना को एंटी–नेशनल यानि राष्ट्र विरोधी नहीं कहा जा सकता है। सीजेआई चंद्रचूड़ ने कहा– ऐसा कुछ भी नहीं है, जिससे टेररिस्ट लिंक साबित होता हो। ऐसा कोई भी तथ्य नहीं है, जिससे साबित हो कि राष्ट्रीय सुरक्षा या फिर कानून–व्यवस्था प्रभावित हुई हो। उन्होंने कहा, सभी इन्वेस्टिगेशन रिपोर्ट को खुफिया नहीं कहा जा सकता है। इससे लोगों के अधिकारों और उनकी आजादी पर असर पड़ता है। सरकार को सूचनाओं को सार्वजनिक करने से पूरी तरह मुक्त नहीं किया जा सकता। यानि सरकार उन तमाम सूचनाओं को छिपा रही है, जिन्हें सार्वजनिक किया जाना चाहिए। और किया जा सकता है।

जस्टिस हिमा कोहली भी इस पीठ में शामिल रहीं। पीठ ने कहा कि चैनल के शेयरधारकों का जमात–ए–इस्लामी हिंद से कथित संबंध चैनल के अधिकारों को प्रतिबंधित करने का वैध आधार नहीं है। अदालत ने कहा, ''राष्ट्रीय सुरक्षा के दावे हवा में नहीं किए जा सकते। इन्हें साबित करने के लिए ठोस तथ्य होने चाहिए। पीठ ने कहा, ''प्रेस का कर्तव्य है कि वह सत्ता से सच बोले और नागरिकों के समक्ष उन कठोर तथ्यों को पेश करे, जिनकी मदद से वे लोकतंत्र को सही दिशा में ले जाने वाले विकल्प चुन सकें। पीठ ने कहा कि एक मीडिया चैनल को सुरक्षा मंजूरी देने से इनकार करने का सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय का कदम प्रेस की स्वतंत्रता पर कुठाराघात करता है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि प्रेस की स्वतंत्रता पर पाबंदी नागरिकों को उसी तरीके से सोचने के लिए मजबूर करती है. पीठ ने कहा, ''सामाजिक आर्थिक राजनीति से लेकर राजनीतिक विचारधाराओं तक के मुद्दों पर एक जैसे विचार लोकतंत्र के लिए बड़ा खतरा पैदा कर सकते हैं।

सबसे चिंताजनक बात तो यह है कि आज राष्ट्रीय सुरक्षा का इस्तेमाल एक हथियार की तरह किया जा रहा है। कोर्ट ने कहा कि, सरकार कानून के तहत नागरिकों के लिए किए गए प्रावधानों से उन्हें वंचित करने के वास्ते राष्ट्रीय सुरक्षा का इस्तेमाल कर रही है। सरकार की नीति की आलोचना को कहीं से भी अनुच्छेद 19(2) में प्रदत्त आधारों के दायरे में नहीं लाया जा सकता। सरकार नागरिकों को कानून के तहत उपलब्ध उपायों से इनकार करने के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा का इस्तेमाल एक औजार के रूप में कर रही है।

इससे इंकार नहीं किया जा सकता कि राष्ट्रीय सुरक्षा और उससे जुड़े मुद्दे न केवल महत्वपूर्ण होते हैं, अपितु संवेदनशील भी। परंतु केवल सरकार की या पद पर बैठे किसी व्यक्ति की आलोचना की जाती है, तो उसे भी आज राष्ट्रीय सुरक्षा से जोड़ दिया जाता है। सत्ता के खिलाफ बोलने वाले को देशद्रोही करार दे दिया जाता है। न्यायालय की इस टिप्पणी ने दोनों बातें स्पष्ट कर दी हैं। यानि एक तो प्रेस की स्वतंत्रता और दूसरी, राष्ट्रीय सुरक्षा और सरकार की आलोचना में अंतर। इसे हथियार बनाकर अपनी रोटियां सेकना सर्वथा अनुचित है।

हां, यहां प्रेस यानि मीडिया को भी अपनी कुछ सीमाएं तय करनी होंगी। मीडिया में आज सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है। न तो मुद्दों पर स्वस्थ बातचीत हो रही है और न ही ऐसा कुछ हो रहा है, जो समाज को बेहतर परिवर्तन और सुधार के लिए प्रेरित करे। कुछ के लिए तो गोदी मीडिया का नया शब्द ईजाद कर लिया गया है। प्रेस की आचार संहिता का अचार पड़ता दिख रहा है। खैर, सीमाओं में ही सही, प्रेस की स्वतंत्रता को महत्व देने के लिए सर्वोच्च न्यायालय को साधुवाद।

...कृपा करहु गुरुदेव के नाई

जयराम शुक्ल

अपन के गुरदेव बजरंग बली हैं। गोस्वामी जी कह गए.. अउर देवता चित्त न धरई, हनुमत सेइ सर्व सुख करई। गोसाईं जी के लिए बजरंगबली देवता, ईश्वर नहीं बल्कि गुरु हैं।

इसलिए जब भी अपने गुरु का बखान करते हैं तो समझिये हनुमान जी का करते हैं। हनुमान चालीसा का आरंभ.. श्री गुरु चरण सरोज रज..से करते हुए कामना करते हैं और ऐसी ही कामना की प्रेरणा देते है..जयजय हनुमान गोसाईं, कृपा करहु गुरुदेव की नाई ..तो जब विश्व के इतने महान, यशस्वी साधक ने उन्हें ही अपना गुरु माना तो अपन भी तो उसी परंपरा के मसिजीवी हैं अदने से ही सही।

सच पूछिये जिंदगी में कोई लौकिक गुरु नहीं मिला, न ही किसी को गुरूबाबा बनाने का कभी ख्याल आया। अलबत्ता पहली से एम.एससी तक और पत्रकारिता में शिक्षक मिले, प्रेरक मिले,अगुवा मिले पर गुरु नहीं ।

आदमी की एक दूसरे से रिश्तदारी स्वार्थ की रस्सी से बँधी होती है। एक उम्र आते आते तो पिता और पुत्र के बीच में भी यही रिश्ता हो जाता है, दूसरों को क्या कहिए। दाढी वाले कनफुकवा तोंदियल अपन की समझ में कभी नहीं आए। एक कान में जो मंत्र फूकते हैं वह दूसरे से निकल जाता है। फिर उनके आशीर्वाद का वजन भी भक्त की आर्थिक हैसियत के हिसाब से होता है।

अजकल ऐसे महंत, पंडे भी अपनी महिमा की मार्केटिंग करते हैं। बाकायदा उनकी प्रपोगंडा टीम होती है जो प्रचारित करती है कि ये कितने महान व चमत्कारी हैं। देश और बाजार के कौन कौन जोधा उनके चेले हैं। ऐसे ही एक गुरू हैं जो औद्योगिक घरानों के बीच अर्बिटेशन का काम करने के लिए जाने जाते हैं।

एक बार एक मित्र एक चमत्कारी संत के यहां ले गए। चुनाव का सीजन था। टिकटार्थी लाइन पर लगे थे। मित्र भी लाइन में लग गए। बात उन दिनों की है जब अपन को बस और रेल की टिकट के लिये भी लाले पड़ते थे। संतजी भगत के चढावा के हिसाब से पार्षदी से लेकर सांसदी तक की टिकट के लिए मैय्या से विनती करते थे। मित्र के लिए मैय्या से विधायकी की शिफारिश की। अब तक मित्र के उम्र की मैय्यत भी निकल गई टिकट नहीं मिली।

चमत्कारी संत के लगुआ ने बताया कि मेरे मित्र के प्रतिद्वंद्वी ने ज्यादा भक्ति की सो टिकट उसको मिल गई। बस उसी दिन समझ में आ गया कि ..जो ध्यावे फल पावे..का क्या अर्थ होता है।

बहरहाल चाँदी तो इन्हीं की कटती है। ये अपने अपने विश्वास की बात है..विश्वास जिंदा रहे..धर्म के नाम का धंधा फले फूले। इनकमटैक्स, इनफोर्समेंट की काली छाया इनपर कभी न पड़े। जनता टैक्स पर टैक्स दे देकर इनके दर पर जैकारा मारती रहे। सरकारें आती

जाती रहें और आश्रमों का टर्नओवर इसी तरह दिनदूना रात चौगुना बढता रहे।

बचपन में भागवत कथा सुनने जाता था। देवताओं राक्षसों के बीच ढिसुंग ढिसुंग की कहानियां सुनकर बड़ा मजा आता था। पर जब गुरूबाबा काम,क्रोध,मद,मोह और माया(धन दौलत) त्यागने का उपदेश देने लगते तो बोरियत होती थी।

अपने गांव में देखा गुरूबाबा लालबिम्ब.और जजमान मरियल सा। रहस्य था गुरूबाबा दस दिन देशी घी की हलवा पूरी छानते थे और उनके आदेश पर बपुरा जजमान उपासे कथा सुनता था। गए साल मित्र के यहां भागवत हुई । रिश्ता निभाना था सो गया..पता चला मोहमाया, लोभ त्यागने का उपदेश देने वाले पूरे दस लाख के करारनामे में आए थे।

सो ऐसे कई वाकए हैं कि न मेरा शिक्षा में कोई गुरु हुआ, न पेशे में और न ही कनफुकवा मंत्र देने वाला।

मैं तलाशता रहा कि कोई गुरु मिले स्वामी रामानंद जैसा जो कान में यह फूंकते हुए ह्रदय में उतर जाऐ ..कि जाति पाँति पूछे नहि कोय, हरि को भजै सो हरि का होय। रैदास जैसा भी कोई नहीं मिला जिसके मंत्र ने क्षत्राणी मीरा कृष्ण की दीवानी मीरा बन गई। कबीर, नानक जैसे सदुरु आज के दौर में होते और तकरीर देते तो उनकी मुंडी पर कितने फतवे और धर्मादेश जारी होते हिसाब न लगा पाते। नेकी कर दरिया में डाल.. जैसा उपदेश देने वाले बाबा फरीद होते तो यह देखकर स्वमेव समाधिस्थ हो जाते कि.. नेकी की सिर्फ़ बातकर, विग्यपन छपा और टीवी में जनसेवा के ढोल बजा।

अपन ने बजरंग बली को गुरु इसलिए बनाया कि भक्तों से उनकी कोई डिमांड नहीं । सिंदूर चमेली का चोला व चने की दाल चढाने वालों दोनों पर बराबर कृपा बरसाते हैं। वे सद्बुद्धि के अध्येता हैं । डरपोक सुग्रीव को राज दिलवा दिया। विभीषण को मति देकर राक्षस नगरी से निकाल लाए व लंकाधिपति बनवा दिया वे । गरीब गुरबों के भगवान हैं । वे लिखने पढने वालों के प्रेरक हैं। वे वास्तव में सदुरु हैं।

हनुमत चरित अपने आप में ग्यान का महासागर है सो साल का हर दिन ही मेरे लिए गुरू पूर्णिमा जैसा है। इसलिए हर दिन उन्हें ही स्मरण करता हूँ कि बजरंगबली सदा सहाय करें।

देश के सबसे अच्छे डेवलपमेंट मॉडल पर अब भाजपा की नजरें क्यों?

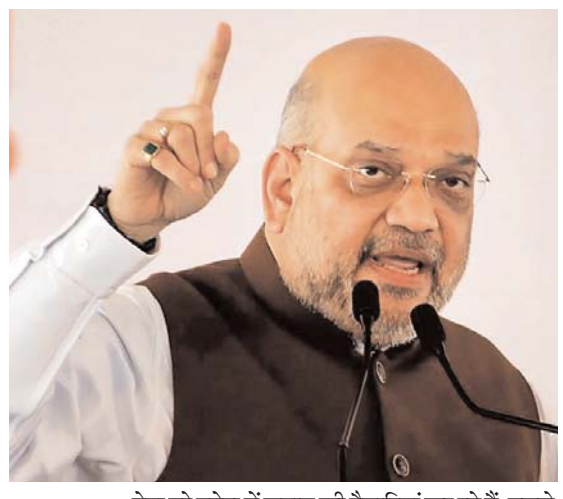

2024 के लोकसभा चुनावों का शंखनाद भाजपा के चाणक्य अमित शाह ने मध्यप्रदेश के छिन्दवाड़ा से शुरू किया है। कोई 40 वर्ष पहले भारत के नक्शे में पिछड़े आदिवासी जिले को तब की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने यह कहकर कमलनाथ को सौंपा कि आज मैं अपने तीसरे बेटे को छिन्दवाड़ा सौंपती हूं। कमलनाथ ने पिछले 40 वर्षों से बेटे बनकर ही छिन्दवाड़ा की सेवा की है और राजनीति से इतर आज देश में छिन्दवाड़ा विकास मॉडल की चर्चा हो रही है। साथ ही साथ छिन्दवाड़ा भाजपा के लिए ऐसा अभेद किला बन गया जिसे वो भविष्य में भी शायद ही तोड़ पाए। यह एक ऐसा विकास मॉडल बना जिसकी विकास संरचना में कमलनाथ सरकारी डेवलपमेंट के साथ–साथ उद्योगों से अपने व्यक्तिगत रिश्तों से स्किल डेवलपमेंट मॉडल खोलते गए। आज छिन्दवाड़ा शायद भारत का एक ऐसा जिला होगा जहां होलस्टिक डेवलपमेंट हुआ है। जिले में कोने–कोने पर रोजगार के लिए स्किल डेवलपमेंट इंडस्ट्री, कॉल सेंटर, साइंटिफिक खेती, बेस्ट इन्फ्रास्ट्रक्चर जैसे काम किये हैं। जिसके कारण ही आज कमलनाथ का छिन्दवाड़ा मॉडल की गूंज पूरे विश्व में है। उन्होंने छिन्दवाड़ा को एक पिछड़े आदिवासी क्षेत्र से एक डेवलपड जिला बना दिया है।

अमित शाह भी कमलनाथ के छिंदवाड़ा मॉडल को भेदने में होंगे विफल

मध्यप्रदेश में भारतीय जनता पार्टी ने विगत दिनों छिंदवाड़ा के चुनावी सभा में देश के केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह प्रमुख रूप से उपस्थित हुए और उन्होंने चुनाव की तैयारियों को हरी झंडी दिखाई। बड़ा सवाल यह है कि भाजपा के चाणक्य कहे जाने वाले अमित शाह आखिर छिंदवाड़ा क्यों गये। इस चुनावी सभा का संकेत सीधे इस बात की तरफ इशारा करता है कि जिस तरह से कमलनाथ के नेतृत्व में कांग्रेस नेता पूरे प्रदेश में चुनाव की तैयारियां कर रहे हैं, उससे भाजपा को बड़ा नुकसान हो सकता है। वहीं, राजनीतिक विशेषज्ञों का माने तो अमित शाह का छिंदवाड़ा दौरा करने के कोई खास मायने सामने निकलकर आने वाले नहीं हैं। कमलनाथ को छिंदवाड़ा का गढ़ कहा जाता है और उन्होंने वहां पर स्थानीय लेवल पर जो विकास के कार्य किये हैं वो जनता के सामने उन्हीं का परिणाम है कि आज भी उस क्षेत्र में कमलनाथ के नाम की जय जयकार होती है।

छिंदवाड़ा तो पहले से विकसित है

शाह की रैली से यह सवाल भी उठने लगे हैं कि जब भाजपा सरकार खुद यह बात स्पष्ट तौर पर जानती है कि छिंदवाडा को कमलनाथ ने पूरी तरह से चमका कर रखा है तो फिर उन्हें वहां विकास के नाम पर यात्रा करने की क्या आवश्यकता है। क्यो जनता को झूठा वायदा कर रहे हैं कि हम ऐसा कर देंगे वैसा कर देंगे। जबकि हकीकत कुछ और ही है। कमलनाथ को छिंदवाड़ा के लोग भगवान मानते हैं और उन्होंने पिछड़े जिले से अग्रणी जिला अगर बनाने का काम किया है तो वह जनता के स्नेह और प्रेम से ही।

कमलनाथ के छिंदवाड़ा मॉडल से कैसे पार पायेंगे

अगर हम कमलनाथ के छिंदवाड़ा मॉडल की बात करें तो वो अपने आप में एक बड़ा काम है, जो किसी भी नेता द्वारा किये गये कार्य में प्रमुख हैं। छिंदवाड़ा ये वो आदिवासी इलाका है जो कभी देश का सबसे पिछड़ा इलाका माना जाता था। लेकिन आज छिंदवाड़ा के पास विकास का अपना मुकम्मल मॉडल है। जिसका श्रेय कमलनाथ को जाता है। कहा जाता है कि कमलनाथ ने जिस भी मंत्रालय को संभाला उससे छिंदवाड़ा को कोई न कोई सौगात जरूर मिली है। आज छिंदवाड़ा से तीन राष्ट्रीय राजमार्ग गुजरते हैं। यही नहीं, इंजीनियरिंग कॉलेज, मेडिकल कॉलेज, पॉलिटेक्निक कॉलेज के अलावा फुटवेयर डिजाइन सेंटर, नॉलेज सिटी, 06 केंद्रीय विद्यालय, एक नवोदय स्कूल आदि वहां तैयार करवाये गये। उद्योग की बात करें तो हिंदुस्तान यूनी लीवर, ब्रिटानिया, रेमंड, भंसाली समेत कई निजी कंपनियों ने जिले में उद्योग लगाए हैं। यस बैंक, स्टैण्डर्ड चार्टर का लाभ लोगों को आज मिल रहा है। वहीं जिले के पातालकोट का जो विकास कमलनाथ ने किया है उसे वहां के निवासी कई पीढ़ियों तक नहीं भूल पायेंगे।

विधानसभा चुनाव में दे चुके हैं मात

2018 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने जिले की सभी सात (छिंदवाड़ा, जुन्नारदेव, अमरवाड़ा, चौरई, सौंसर, परासिया और पांढुर्ना) विधानसभा सीटें जीती थीं। कमलनाथ मुख्यमंत्री बने तो छिंदवाड़ा से विधायक दीपक सक्सेना ने त्यागपत्र देकर सीट खाली कर दी और उपचुनाव में कमलनाथ ने फिर जीत दर्ज की। इसके बाद नगरीय निकाय के चुनाव हुए इसमें भी नगर निगम छिंदवाड़ा का महापौर कांग्रेस का चुना गया। इसी तरह जिला पंचायत के अध्यक्ष–उपाध्यक्ष कांग्रेस के बने। कुल मिलाकर छिंदवाड़ा को अमित शाह और भाजपा जिस उद्देश्य के साथ चुनाव का मैदान बनाना चाहती है उसमे उनका सफल होना मुश्किल ही नहीं नामुकिन है।

40 साल से कमलनाथ का गढ़ है छिंदवाड़ा जिला

पिछले 40 साल से कमलनाथ का गढ़ है। वे यहां से लंबे समय तक सांसद रहे और अब विधायक हैं। उनके पुत्र नकुलनाथ सांसद हैं। कमलनाथ ने वर्षों पहले ही छिंदवाड़ा को जिस गति के साथ विकसित किया है वह अपने आप में एक मिसाल है। भाजपा नेता विकास के इस मॉडल को देखकर बुरी तरह परेशान हैं और अब कमलनाथ द्वारा किए गए इन कार्यों को अपना बताकर वोटों की राजनीति करने की योजना बना रहे हैं। जबकि भाजपा नेताओं को उन जिलों में जाकर काम करना चाहिए जो आज भी पिछड़े हैं जहां आज भी विकास नहीं हुआ, लोग आज भी परेशान हो रहे हैं। लेकिन भाजपा ने व्यक्ति विशेष को केंद्र में रखकर चुनाव जीतने की योजना पर यह भद्दा खेल रचा है जिसमें कामयाबी मिलना मुश्किल है।

विजया पाठक, संपादक, जगत विजन

त्योहारों की पुण्याई तक कैसे पहुंची राजनीति की लड़ाई?

सरयूसुत मिश्रा

देवदूत हनुमान की जयंती का त्योहार शांतिपूर्ण मनाने के लिए भारत सरकार द्वारा सभी राज्यों को एडवाइजरी जारी की गई है. सामान्यत: एडवाइजरी तभी जारी होती है जब सरकार को त्योहारों पर अशांति और असामान्य परिस्थितियों की सूचनाएं होती हैं।

रामनवमी पर बिहार बंगाल और दूसरे राज्यों में घटी सांप्रदायिक घटनाओं का ज्वार अभी पूरी तरह से उतरा नहीं है और हनुमान जयंती पर जुलूस और शोभायात्रा की तैयारियों को लेकर अनुमति नहीं मिलने की शिकवा–शिकायतें शुरू हो गई हैं. सेकुलरवादी सरकारों द्वारा 144 के नाम पर जुलूस और शोभा यात्राओं की अनुमतियां नहीं दी जा रही हैं. हिंदू संगठन हनुमान जयंती मनाने पर अड़े हुए हैं. ऐसे माहौल में तनाव समाज से ज्यादा सरकारों की ओर से निर्मित होते दिखाई दे रहा है।

पर्व और त्योहार भारतीय संस्कृति के प्राण माने जाते हैं. उल्लास के इन अवसरों को एडवाइजरी और धारा 144 की सीमा में मनाने के सरकारी प्रयासों को भारतीय संस्कृति के साथ न्याय कैसे कहा जाएगा? यह दुर्भाग्यजनक है कि त्योहारों के आयोजन को सियासी हथियार के रूप में उपयोग किया जाने लगा है. राजनीति की लड़ाई त्योहारों तक कैसे पहुंच गई है यह सरकारों से ज्यादा समाज के लिए चिंता का विषय है।

मीडिया के किसी भी प्लेटफार्म पर रामनवमी की सांप्रदायिक घटनाओं को लेकर अभी तक लगातार आरोप–प्रत्यारोप का माहौल बना हुआ है. इन घटनाओं के लिए राजनीतिक दल एक दूसरे पर साजिश का आरोप लगा रहे हैं. बिहार और बंगाल दोनों राज्यों में बीजेपी और राज्य की सरकारों के बीच रामनवमी पर दंगों को लेकर तलवारें खिंची हुई हैं. बिहार में नीतीश कुमार इसके लिए इशारों में बीजेपी को जिम्मेदार बता रहे हैं. वहीं ममता बनर्जी तो सीधे केंद्र सरकार पर हमलावर हैं. उन्होंने तो यहां तक आरोप लगा दिया है कि केंद्रीय बलों द्वारा साजिश कर दंगे कराए गए हैं. संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्तियों द्वारा राजनीति में इस तरह के असंवैधानिक वक्तव्य समाज को तोड़ने के ही कारक बनते हुए दिखाई पड़ते हैं।

ममता बनर्जी तो अपने विरोधियों को एक साथ दिखाने के लिए भगवान राम को जोड़कर राम और वाम पर मिलकर राज्य में गड़बड़ी कराने का आरोप लगा रही हैं. उनका इशारा वामपंथी और राम समर्थक बीजेपी पर मालूम पड़ता है. भारतीय संस्कृति त्योहारों में जाति समुदाय और संप्रदाय को महत्व नहीं देती. हर संप्रदाय हर्ष और उल्लास के साथ मिलकर भारत में त्योहार मनाते हैं. राजनीतिक समीकरण ही देश के त्योहारों को हिंदू मुस्लिम में विभाजित कर रहे हैं जो दुर्भाग्यपूर्ण है. इस देश में मुस्लिम समाज के रमजान के त्यौहार पर रोजा इफ्तार तक हिंदू समाज की ओर से आयोजित किए जाते रहे हैं. त्योहारों को सियासी हथियार के रूप में उपयोग करने की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण ऐसी सद्भावना के मिसालें भले ही कम होती जा रही हैं लेकिन भाव अभी भी जीवित है।

राजनीति हर प्रतीक का उपयोग करने में सिद्धहस्त होती है. आज की राजनीति का स्तर कितना निराशाजनक हो गया है कि किसी दूसरे राजनीतिक दल को कमतर बताने के लिए धार्मिक प्रतीकों का उपयोग किया जाता है. सनातन शाश्वत हिंदू आस्था के प्रतीक भगवान राम को किसी एक खास राजनीतिक दल से जोड़ने में जितना उस दल का योगदान नहीं है उससे ज्यादा उसके विरोधियों का योगदान है. ऐसी ही परिस्थितियां हिंदू त्योहारों को लेकर भी बनी हुई हैं।

अगर त्योहार शांति से मनाए जाते रहेंगे तो त्योहारों का राजनीतिक नफा–नुकसान कैसे उठाया जा सकेगा? राजनीति का हर खिलाड़ी अपने एक्शन को सेकुलर और दूसरे के प्रयास को सांप्रदायिक स्थापित करने में कोई कमी नहीं छोड़ता. यहीं से राजनीतिक विभाजन शुरू होता है. यहीं से तुष्टिकरण और ध्रुवीकरण की शुरुआत होती है. पहले तो ऐसी परिस्थितियां चुनाव के समय पैदा करने की कोशिश की जाती थी लेकिन अब तो हर त्यौहार जैसे भावी चुनाव की भूमिका तैयार करने के लिए उपयोग किया जाने लगा है।

बिहार में दो जिलों में रामनवमी पर सांप्रदायिक घटनाएं हुई और इसी दौरान इफ्तार के कार्यक्रम में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के जिस तरीके के दृश्य मीडिया में सामने आए हैं उससे क्या कोई ध्रुवीकरण को रोक सकता है? सियासी बयानों का जो हवन किया गया है उसने तुष्टीकरण और ध्रुवीकरण को गहरा करने का ही काम किया है. राजनीतिक दलों को विभाजन की विभीषिका समझ नहीं आती, ऐसा तो नहीं माना जा सकता बल्कि यह कहना ज्यादा सही होगा कि उन्हें इस आपदा में अवसर तलाशने की महारत हासिल होती है।

राजनीति में आज भगवान राम के नाम का जितनी बार उपयोग किया जाता है, चाहे वह नकारात्मक दृष्टि से हो या सकारात्मक दृष्टि से हो, वह सब तुष्टिकरण और ध्रुवीकरण की सोच का नतीजा होता है. राजनीतिक कारणों से पर्व और त्योहार के आयोजनों को जिस ढंग से प्रदूषित किया जा रहा है उसे रोका जाना संस्कृति की रक्षा के लिए बहुत जरूरी है।

राजनीतिज्ञों से हाथ जोड़कर यही प्रार्थना की जा सकती है कि त्योहारों को राजनीति से दूर रखें. राजनीति के मखमल में लपेटकर शब्दभेदी तलवारें भले ही आम इंसान समझ ना पाए लेकिन उसका दुष्परिणाम तो सब को भुगतना पड़ता है. त्योहारों को राजनीति का अड्डा बनने से रोकने की ईमानदार कोशिश इस लोक और परलोक में पुण्य का भागीदार बनाएगी।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक भरत पटेल द्वारा इंडिपेंडेंट प्रेस 11, प्रेस काम्प्लेक्स, एमपी नगर, जोन-1, भोपाल से मुद्रित तथा 226, एमपी नगर जोन-2, भोपाल से प्रकाशित। संपादक — भरत पटेल, प्रबंध सलाहकार — भारती पटेल, संपादकीय सलाहकार — विष्णु कौशिक, सलाहकार संपादक - स्मिता पटेल, स्थानीय संपादक —संजय सक्सेना,
प्रकाशन से संबंधित समस्त समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार। समस्त न्यायिक कार्यवाहियों के लिए क्षेत्राधिकार भोपाल न्यायालय का रहेगा। रजि. नं. भोपाल डिवी. 48 म.प्र.। ई-मेल : dspbpl67@gmail.com, वेबसाईट: dainiksandhyaprakash.in

छात्राओं ने एसपी के मार्गदर्शन मे महिला थाना मे किया इंटर्नशिप

बैतुल :- पुलिस अधीक्षक सीमाला प्रसाद के मार्गदर्शन मे शासकीय जे एच कॉलेज बैतूल से इंटर्नशिप हेतु आई छात्राओ को इंटर्नशिप के दौरान महिला थाना प्रभारी एवं स्टाफ के द्वारा थाने मे की जाने वाली कार्यवाही से अवगत कराया साथ ही पुलिस की कार्यप्रणाली समझाई गई । थाने मे अपराध लेखन का कार्य न्यायालय संबंधी कार्य डे ऑफिसर नाइट अधिकारी का कार्य, इसके अलावा पुलिस बल की होने वाली भर्ती प्रक्रिया, रैंक आदि की विस्तार से जानकारी दी गई। महिला थाना का गठन किस उद्देश्य से किया गया है । जिले की विभिन्न पुलिस शाखाएं जैसे साइबर सेल फोरेंसिक लैब आदि एवं जिले मे पुलिस कप्तान के मुख्य दायित्वों के बारे में जानकारी दी। महिला थाने में एक सप्ताह की इंटर्नशिप के दौरान जे एच कॉलेज से छात्र/छात्रा दामिनी मानकर शीतल रघुवंशी, पूनम ढढोरे, रौनक बरमासे,मुनमुन गणेशे आदि शामिल हुए।इंटर्नशिप के पश्चात् छात्राओ ने पुलिस अधीक्षक बैतूल से अपना एक सप्ताह का अनुभव साझा किया।

पुलिस विभाग से सेवानिवृत अधिकारियों को एसपी ने शॉल श्रीफल देकर सम्मानित किया

बैतुल - पुलिस विभाग मे पिछले चालीस वर्ष से अधिक समय की सेवा देने के पश्चात दिनांक 31 मार्च 23 को सेवा निवृत हुए उपनिरीक्षक विजय रघुवंशी एवं सहायक उपनिरीक्षक जनकलाल पवार का आज पुलिस अधीक्षक कार्यालय बैतूल मे सेवा निवृत्ति समारोह रखा जहां पुलिस अधीक्षक सीमाला प्रसाद द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया साथ ही सेवा के दौरान किए गए उनके कार्यो की सराहना की गई। चर्चा में बताया कि उनके द्वारा रामनवमी ड्यूटी सी एम सुरक्षा ड्यूटी हेतु कड़ी सुरक्षा व्यवस्था में व्यस्तता के कारण सेवा निवृत्ति के चार दिन बाद आज दोनो अधिकारियो का विदाई समारोह आयोजित रखा गया है।

खुले ट्यूबवेल की जानकारी देने पर एस पी द्वारा सूचनाकर्ता पांच हजार रुपए से इनाम से सम्मानित

बैतुल । थाना आमला ग्राम डोडावानी स्थित एक खेत मे खुला असफल ट्युबेल होने की सूचना पर पटवारी से स्थल पंचनामा तैयार करवाया जाकर खुला ट्यूबेल बंद कराया गया तथा भूस्वामी के विरूद्ध थाना आमला मे धारा 188 भादवि के तहत प्रकरण कायम किया गया। आज दिनांक को पुलिस कार्यालय बैतूल में ट्यूबवेल की सूचना देने वाले सूचनाकर्ता को उसके सराहनीय कार्य के उत्साहवर्धन के लिए पुलिस अधीक्षक सीमाला प्रसाद द्वारा पांच हजार रु की इनामी राशि देकर सम्मानित किया गया। आपको बता दे कि पिछले दिनों मांडवी ग्राम में एक आठ वर्षीय बालक की खुले बोर में गिरने से मृत्यु हो गई थी । जिसके बाद जिले में खुले बोर रखने पर पाबंदी जिला कलेक्टर द्वारा लगा दी गई है ।

एरोरा, जमुनिया में आग से नष्ट हुई फसल का जायजा लेने पहुंचे राहुल सिंह

दमोह इन दिनो फसल कटाई का काम चल रहा इसी दौरान दमोह जनपद के ग्राम- एरोरा (जमुनिया) में विगत दिवस खेत मे लगी लाइन फाल्ट होने के कारण आग लग जाने से राजू यादव,लीलाधर यादव,बृजेश यादव, विशाल यादव,भुवानी प्रसाद यादव की 6-7 एकड़ के करीब फसल पूरी तरह आग लगने से नष्ट हो गई। समय रहते फायर ब्रिगेड के माध्यम से आग पर नियंत्रण किया गया। कैबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त राहुल सिंह ने मौके पर पहुंचकर हुए नुकसान का जायजा लिया एवं संबंधित अधिकारियों को फसल का उचित मुआवजा दिलाने हेतु निर्देशित किया! साथ-साथ बिजली विभाग के अधिकारियों को लाइन सुधार कार्य हेतु निर्देशित किया।

भाजपा राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री शिव प्रकाश 6 को धार प्रवास पर

धार। भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री शिव प्रकाश जी 6 अप्रेल को धार प्रवास पर रहेंगे इस दौरान भाजपा जिला कार्यालय पर भाजपा वरिष्ठ नेता व कार्यकर्ताओं को संबोधित करेंगे। साथ ही भाजपा संभाग संगठन सह प्रभारी श्री राघवेंद्र गौतम ,जिला संगठन प्रभारी श्री श्याम बंसल जी,भाजपा जिला अध्यक्ष श्री राजीव यादव,भाजपा प्रदेश मंत्री जयदीप पटेल उपस्थित रहेंगे।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया की राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री शिव प्रकाश जी 6 अप्रेल को दोपहर 12 बजे बूथ विस्तारक अभियान 0.2 की समीक्षा कर आगामी संगठनात्मक कार्यो पर मार्गदर्शन देंगे। बैठक में अपेक्षित श्रेणिया बनाई है जो निम्न प्रकार है।

अपेक्षित श्रेणिया- सांसद/विधायक/निगम मंडल अध्यक्ष, उपाध्यक्ष,जिला पंचायत अध्यक्ष ,भाजपा वरिष्ठ नेता,, भाजपा प्रदेश कार्यसमिति वर्तमान व पूर्व सदस्य, नगर पालिका अध्यक्ष,जनपद अध्यक्ष, पूर्व जिला अध्यक्ष,पूर्व विधायक,भाजपा जिला पदाधिकारी, सभी भाजपा मंडल अध्यक्ष उपस्थित रहेंगे। उक्त जानकारी भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने दी।

अवैध गांजा तस्करी करते 2 आरोपी गिरफ्तार

सागर नाका पुलिस चौकी एवं दमोह देहात पुलिस की संयुक्त कार्यवाई

दमोह।जिले मे बिक रहे अवैध मादक पदार्थ गांजा की बिक्री पर अंकुश लगाने अब दमोह पुलिस सक्रिय नज़र आने लगी है जहा पर दमोह पुलिस अधीक्षक राकेश कुमार सिंह द्वारा अवैध गांजा विक्रय एवं परिवाहन के विरुद्ध अधिक से अधिक कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया है जिसको ध्यान मे रखकर में दिन बुधवार दिनाँक 05.04.2023 को उनि.गरिमा मिश्रा चौकी प्रभारी सागर नाका को विश्वशनीय मुखबिर द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि न्यू ओबर ब्रिज के पास सतखड़िया रोड पर दो व्यक्ति अवैध गांजा लिये बेंचने की फिराक में खड़े है जो उक्त सूचना से वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराते हुए राकेश कुमार सिंह पुलिस अधीक्षक दमोह,शिव कुमार सिंह अति.पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में एवं भावना दांगी नगर पुलिस अधीक्षक के मार्गदर्शन में उनि.अमित मिश्रा थाना प्रभारी दमोह देहात के नेतृत्व में आवश्यक कार्यवाही करते हुए न्यू ओबर ब्रिज के पास सतखड़िया रोड पर पहुंचकर देखा जो 02 व्यक्ति साड़ी के बीच गांजा के पैकेट बनाकर रखे मिले जिनसे नाम पता पूंछने पर अपना नाम 1भरत पटैल पिता बैजनाथ पटैल उम्र 42 साल निवासी चंदौरा मड़िया थाना हिण्डोरिया 2. जुगराज पिता हरिप्रसाद विश्वकर्मा उम्र 39 साल निवासी ग्राम रियाना थाना बटियागढ़ का होना बताया जो विधि सम्मत कार्यवाही करते हुए आरोपियों के कब्जे से अवैध मादक पदार्थ गांजा कुल 1 किलो 850 ग्राम कीमती 14500 रुपये एवं 02 साड़ी जब्त की जाकर आरोपियों को गिरफ्तार कर थाना दमोह देहात में अपराध क्र 184/23 धारा 8/20 एनडीपीएस एक्ट का प्रकरण पंजीबद्ध किया गया। आरोपियों को माननीय न्यायालय जेआर पर पेश किया गया।

जप्त मादक पदार्थ की मात्रा

1- 01 किलो 850 ग्राम अवैध मादक पदार्थ गांजा कीमती करीबन 14500 रुपये एवं 02 साड़ी

गिरफ्तार आरोपियों मे1. भरत पटैल पिता बैजनाथ पटैल उम्र 42 साल निवासी चंदौरा मड़िया थाना हिण्डोरिया 2. जुगराज पिता हरिप्रसाद विश्वकर्मा उम्र 39 साल निवासी ग्राम रियाना थाना बटियागढ़

सराहनीय कार्य करने वाले अधिकारी / कर्मचारी उनि.अमित मिश्रा थाना प्रभारी दमोह देहात उनि. गरिमा मिश्रा चौकी प्रभारी सागर नाका, सउनि. विजय चौबे, प्र.आर 462 फिरदोस,आर. 231 दीपेश, आर. 746 दीपचंद, आर. 563 राजकुमार ठाकुर, आर. चालक 590 रविन्द्र की सराहनीय भूमिका रही।

ग्रैंड एवेन्यू एलकेजी कॉलोनी प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के पंचम दिवस अन्न से हुआ प्रतिमाओं का अधिवास

भक्तों ने लगाई यज्ञ की परिक्रमा

इटारसी । एलकेजी कॉलोनी में नवनिर्मित मंदिर में भगवान भोलेनाथ, माता जगदंबे, राधा कृष्ण, हनुमान जी, की प्रतिमाओं के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के पंचम दिवस प्रतिमाओं का अन्न से अधिवास किया गया ।बुधवार को द्रव्य से अधिवास होगा ।बुधवार को विधायक डॉ सीताशरण शर्मा ने भी यज्ञ की परिक्रमा की। मंदिर प्रांगण में आयोजित पंच कुंडी श्री राम रुद्र महायज्ञ के पांचवे दिन मुख्य यजमान घनश्याम दुगाया, शिव भारद्वाज दिलीप भावसार ,सुशील चौधरी एस डी एम साहब की पत्नी सीमा रघुवंशी, दीप्ति कोठारी सहित दो दर्जन लोगों ने सा पत्नी यज्ञ में आहुतियां छोड़ी। इस अवसर पर यज्ञ आचार्य होलीपुरा आश्रम के महंत पंडित विजय पांडे ने कहा कि यज्ञ से वातावरण शुद्ध होता है आसुरी शक्तियों का नाश होता है। श्री पांडे ने कहा कि यज्ञ परिक्रमा करने से समस्त पापों का नाश होकर श्रद्धालु को मनवांछित फल मिलता है। उन्होंने उपस्थित श्रद्धालुओं को श्री राम रूद्र महायज्ञ महिमा बताई श्री । इस अवसर पर कॉलोनी के डायरेक्टर दिनेश गोठी, निपुण गोठी, सत्यम अग्रवाल , अशोक अग्रवाल, सहित कॉलोनी के गणमान्य नागरिक दिन भर उपस्थित रहे। शाम को संध्या आरती के पश्चात कॉलोनी की महिलाओं ने यज्ञ स्थल पर भजन कीर्तन किए । दिन भर यज्ञ की परिक्रमा करने श्रद्धालुओं की भारी भीड़ रही ।

मजिस्ट्रेट चैकिंग: 126 लोगों के काटे चालन

शिवपुरी न्यायालय द्वारा थाना कोतवाली, देहात,फिजिकल एवं यातायात पुलिस के साथ शहर के विभिन्न चौराहों पर मोबाइल कोर्ट लगाया गया। यह कार्यवाही माननीय मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट महोदय के मार्गदर्शन में अमित प्रताप सिंह न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी के निर्देशन में की गई। यह कार्रवाई मोटरसाइकिल, ऑटो,लोडिंग,कार आदि वाहनों पर की गई है। जिसमें बिना हेलमेट तीन सवारी बिना नंबर ओवरलोडिंग परमिट की शर्तों का उल्लंघन बिना वर्दी आदि धाराओं में कार्रवाई कर प्रकरण न्यायालय में पेश किया जाएगा। इस दौरान थाना कोतवाली,देहात, फिजिकल, एवं यातायात का पुलिस बल मौजूद रहा। इस दौरान तीनों थाना क्षेत्रों में 126 प्रकरणों के चलते कार्यवाही की गई है। अब इन बाहनों को कल कोर्ट में पेश किया जाएगा।

मुख्यमंत्री चौहान के कार्यक्रमों में अधिक से अधिक हो जनसहभागिता: विधायक

रतलाम । मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान के 8 अप्रैल के रतलाम दौरे की तैयारियों को लेकर भारतीय जनता पार्टी की वृहद् बैठक जिलाध्यक्ष राजेन्द्रसिंह लुनेरा की अध्यक्षता में हुई। इसमें विधायक चेतन्य काश्यप ने पार्टी पदाधिकारियों, जनप्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं से मुख्यमंत्री के कार्यक्रमों में अधिक से अधिक जनसहभागिता सुनिश्चित करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि रतलाम का सौभाग्य है कि लाडली बहना योजना को लेकर मुख्यमंत्री यहां बैठक लेंगे। इसमें अधिक से अधिक बहनें शामिल होना चाहिए।

विधायक श्री काश्यप ने मुख्यमंत्री के कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए बताया कि श्री चौहान रतलाम में सबसे पहले नेहरू स्टेडियम में आयोजित होने वाले लाडली बहना योजना के कार्यक्रम में शामिल होंगे। यहां शहर में होने वाले निर्माण एवं विकास कार्यों का भुमिपूजन, शिलान्यास के बाद सभा होगी। उसके पश्चात अम्बेडकर भवन में लाडली बहना योजना का पंजीयन करवाएंगे। श्री चौहान पैसा एक्ट पर भी क्षेत्र के लाभान्वित होने वाले लोगों से चर्चा करेंगे। इसके बाद सैलाना रोड स्थित श्रीजी पैलेस में बुद्धिजीवियों से संवाद करेंगे।

भाजपा पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं से भी मिलेंगे। श्री काश्यप ने कहा कि रतलाम भ्रमण के दौरान श्री चौहान का मार्ग में परम्परानुसार स्वागत किया जाएगा। उन्होंने प्रत्येक वार्ड से लाडली बहना सम्मेलन में अधिक से अधिक बहनों की सहभागिता करवाने का आह्वान किया। इस अवसर पर सभी वार्डों के प्रतिनिधियों ने अपने लक्ष्य निर्धारित किए।

इस दौरान महापौर प्रहलाद पटेल, निगम अध्यक्ष मनीषा शर्मा, जिला महामंत्री प्रदीप उपाध्याय, निर्मल कटारिया, जिला उपाध्यक्ष दिनेश शर्मा, बलवंत भाटी, सुनील सारस्वत, जिला कोषाध्यक्ष जयवंत कोठारी, जिला मंत्री सोना शर्मा, जिला कार्यालय मंत्री मनोज शर्मा, जिला मीडिया प्रभारी अरूण त्रिपाठी, जिला भण्डार प्रमुख दशरथ पाटीदार, मण्डल अध्यक्ष निलेश गांधी, मयुर पुरोहित, कृष्णा सोनी, विनोद यादव, मण्डल प्रभारी राकेश परमार, भाजयुमो जिलाध्यक्ष विप्लव जैन, महिला मोर्चा जिला महामंत्री अनिता पाहुजा सहित पार्टी के जिला एवं मण्डल पदाधिकारी एवं कार्यकर्तागण तथा पार्षदगण उपस्थित रहे।

आज हनुमान जयंती पर पुलिस की रही चाक चौबंद व्यवस्था

हजारों श्रद्धालुओं ने छींद धाम मैं टेका माथा ,मंदिर का इतिहास है 500 वर्ष पुराना

बरेली 7 कलयुग में सदा ही भक्तों के संकट हरण करने वाले वीरों के वीर महावीर बजरंगबली का आज प्रणव बड़े ही धूमधाम से मनाया जा रहा है आज हनुमान जयंती पर बरेली नगर से 6 किलोमीटर दूर स्थित छींदं मंदिर को दुल्हन की तरह सजाया गया है जहग-जगह भंडारे के आयोजन के साथ सुन्दरकाण्ड पाठ भक्त कर रहे हैं सुबह से भक्तों का तांता लगा हुआ है प्रशासन ने भक्तों को कोई भी परेशानी ना हो इसके लिए हर संभव व्यवस्थाएं की है बरेली थाना प्रभारी आशीष सप्रे ने बताया कि रात से ही भक्तों का आना-जाना लगा हुआ है जगह -जगह पर पुलिस बल की व्यवस्थाएं की है आने जाने के रूट अगल-अगल बनाए गए जिससे कि लोगों को आने जाने में कोई परेशानी का सामना ना करना पड़े और जाम की स्थिति ना बन सके हर मूवमेंट पर पुलिस प्रशासन की नजर बनी हुई है जिले के कलेक्टर एसपी एसडीओपी एसडीएम सहित प्रशासनिक अधिकारी हर गतिविधियों पर नजर बनाए हुए हैं दोपहर 2 से संगीतमय भजन का आयोजन छींदं मंदिर प्रांगण में आयोजित किया जाना है जिस कारण श्रद्धालुओं की संख्या अधिक हो सकती है जिसको लेकर प्रशासन पूरी तरह अलर्ट है गौरतलब है कि मंगलवार और शनिवार के दिन छींद धाम में भक्तों का मेला लगता है देश-विदेश से लोग दादा के दर्शन करने के लिए यहां आते हैं आज हनुमान जयंती पड़ने से यहां श्रद्धालुओं का हजारों की संख्या में जनसैलाब देखा गया छींदं धाम मंदिर का इतिहास इस प्रकार है म.प्र. के रायसेन जिला मुख्यालय से 90 किमी दूर भोपाल जबलपुर रोड पर बरेली तहसील में हैं बजरंगवली का प्रसिद्द स्थान छीन्द धाम, जो राजधानी भोपाल से 130 द्यद्व की दूरी पर स्थित है । यहाँ पर हर भक्त की मनोकामनाए पूर्ण होती है। भारत के हर प्रान्त से यहाँ भक्तो के आने का सिलसिला साल भरा लगा रहता हैं। जो आज हनुमान जयंती के अवसर पर ओर ज्यादा देखा जाता हैं। इस धाम का चमत्कार सुनकर आतें है भक्त जो यहाँ से झोली भरकर ले जाते है ।यहाँ खास बात यह भी है कि यहा पर भक्तो की मनोकामनाए पत्र सन्देश द्वारा भी पूर्ण होती हैं यहा पर चना गुड नारियल, मिठाई का प्रसाद यहाँ पर चढ़ाया जाता हैं । इस स्थान पर बजरंग बलि के मंदिर की स्थापना 1965 में हुई थी जबं मूर्ती मात्र एक फिट की थी लेकिन चमत्कारों का सिलसिला बढ़ता रहा लोगो की आस्था की गंगा बहती रही और बजरंगवली की मूर्ती भी बढती गई जो आज पांच फिट ऊंची हैं । जब इस मूर्ती की स्थापना स्वर्गीय धन्नुलाल जी रघुवंशी ने की थी तभी से ही उनके परिवार के लोग पुजारियों के साथ इस मंदिर का रख रखाव करतें हैं । इस मंदिर का इतिहास 500 वर्ष पुराना है वही मंदिर का निर्माण 1965 में हुआ था । जब से आज तक यहा पर आस्था का जन सैलाब बढता चला जा रहा हैं। यहाँ पर जो भी भक्त 5 मगलवार या शनिवार को आता है उसकी सभी मनोकामनाए पूरी हो जाती है । इस मंदिर की विशेषता है की इस स्थान पर हनुमान जी कि दक्षिण मुखी मूर्ति विराजमान है जिसे शस्त्रो के अनुसार सिद्ध माना गया है वही हनुमान जी के इस दरबार मे उनके सामने है राम दरवार जहा विराजमान है श्रीराम सीता और लक्ष्मण । इस सिद्ध धाम की कई विशेषता है यहाँ पर भक्त धन धान, संतान ,यश,स्वास्थ्य लाभ की मनोकामनाए लेकर आते हैं। लोगो की आस्था का अंदाजा इस बात से भी यहाँ लगाया जा सकता है कि यहा कई ला इलाज बिमारियां भी दर्शन मात्र से दूर हो जाती हैं।

मंत्री बिधायक सहित प्रशासनिक हस्तियां दरबार में लगाती है हाजिरी ---

मंदिर का चमत्कार ऐसा है कि यहां पर हर वीआईपी मत्था टेकने के लिए आता है चाहे वह मध्य प्रदेश का मुख्यमंत्री मंत्री या न्यायाधीश जज हो हर कोई दादा जी के दरबार में अर्जी लगा होता है और दादा जी के यहां पर मनोकामना पूर्ण होने के बाद यहां पर विशाल भंडारे का आयोजन भी लोग कराते हैं

पुलिस की रही चाक चौबंद व्यवस्था

हनुमान जयंती को देख कर श्रद्धालुओं का आवागमन बढ़ जाता है इसे देखकर छींदं में श्रद्धालुओं का बड़ी संख्या में आना जाना तो होता ही है श्रद्धालुओं की सुरक्षा को लेकर चप्पे-चप्पे पर पुलिस व्यवस्था चाक-चौबंद दिखाई दी है वहीं पुलिस प्रशासन ने कहा कि श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की कोई भी परेशानी नहीं आने देंगे

इनका कहना है

हमने हनुमान जयंती को देखकर पुलिस की व्यवस्था चाक-चौबंद कर दी थी चप्पे-चप्पे पर पुलिस की निगरानी है धीदं मंदिर पूरी तरह पुलिस की नजर में है श्रद्धालुओं को असुविधा ना हो जिस कारण पहुंच मार्ग और निकासी मार्ग अलग-अलग बनाए गए हैं 7

आशीष सप्रे, थाना प्रभारी बरेली

गंभीर बीमारी से पीड़ित 9 लोगों का होगा उपचार

छतरपुर। सामान्य प्रशासन विभाग मंत्रालय भोपाल द्वारा छतरपुर जिले के गंभीर बीमारी से पीड़ित 9 लोगों के बेहतर उपचार के लिए मुख्यमंत्री स्वेच्छा अनुदान मद से 4.40 लाख रूपए की आर्थिक सहायता राशि स्वीकृत की गई है। सुरेश शर्मा पिता रामदीन निवासी रिछारा झिगरी को 50 हजार, श्रीमती तुलसा पटेल पति नत्थू निवासी ग्राम खजुआ राजनगर को 25 हजार, श्रीमती निशा पति अभय कुमार चौरसिया निवासी वार्ड नम्बर 5 फौजदार मोहल्ला राजनगर को 25 हजार, कु. काजल आदिवासी पिता पप्पू आदिवासी ग्राम पनया घुवारा को 50 हजार, कु. प्राची मिश्रा पिता राजेश मिश्रा निवासी अमरौनिया को 80 हजार, श्रीमती मतथी पति मातादीन पटेल निवासी लखनगुवां को 65 हजार, नन्ने भाई पिता पूरन निवासी निवार को 45 हजार, चिंता यादव पिता गिला मडदेवरा को 50 हजार और प्रकाश लोधी पिता लखन लोधी निवासी भदातोर सनौदा को 50 हजार राशि दी गई है।

कार्यालय-जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित सिवनी(म.प्र.)

क्रमांक/फील्ड-लेखा/2023/08 सिवनी दिनांक 04.04.2023

निविदा

उपरोक्त बिषयान्तर्गत जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित,सिवनी के मुख्यालय एवं जिले में संचालित 17 शाखाओ तथा 57 सहकारी समितियों के लिये मास्टर बैंकर्स ब्लैंकेट पालिसी का क्षतिपूर्ति बीमा बर्ष 2023-24 का निम्नानुसार किया जाना है:-

बैंक स्तरः–

क0	विवरण	कुल कीमत	रिमार्क
1	बैंक एवं सम्बद्ध शाखाऐं		
2	बेसिक (बैंक कर्मचारी 71+ शाखाऐं 17 एवं मुख्यालय 1)	1000000.00	बैंक स्तर
3	कैश इन सैफ	70000000.00	बैंक स्तर
4	कैश इन ट्राजिस्ट	15000000.00	बैंक स्तर
5	मुख्य कार्यालय भवन	1000000.00	बैंक स्तर
6	शाखा कुरई भवन	300000.00	बैंक स्तर
7	फनीचर्स फिक्चर्स	2769000.00	बैंक स्तर
8	कम्प्यूटर/उपकरण	1032000.00	बैंक स्तर
9	सी0सी0टी0व्ही0कैमरा 17 नग सिक्यूरिटी अलार्मस 17 नग	407000.00	बैंक स्तर
	योग	**91508000.00**	

समिति स्तरः–

क0	विवरण	कुल कीमत	ईकजाई योग	समिति स्तर
	बेंक से वित्तपोषित 57 समितियॉ			
1	उप0भंडार खाघान्न स्टॉक	23010000.00		
2	रासायनिक खाद स्टॉक	23625000.00		
3	कैरोसिन(अंदर+बाहर) स्टॉक	17370000.00		
4	लेपटाप	6660000.00		
5	जनरेटर	1475000.00		
			72140000.00	
6	कर्मचारी फेडेलिटी	46950000.00	**46950000.00**	
7	समिति कैश राशि (तिजोरी)	29025000.00	**29025000.00**	
8	उप0 भंडार राशि	55750000.00		
9	बचत बैंक राशि	18000000.00		
10	बिजली बिल कलेक्शन राशि (सिलक राशि)	7377000.00		
			81127000.00	
11	पक्की गोदाम	99970000.00		
12	कच्ची गोदाम	11560000.00		
			111530000.00	
12	कैश इन ट्राजेक्सन	2500000.00	**2500000.00**	
14	गेहूँ लिमिट स्टॉक	26200000.00	**26200000.00**	
	योग		**369472000.00**	

उपरोक्तानुसार बीमा नवीनीकरण बर्ष 2023-24 हेतु बीमा कम्पनियों से दरें दिनांक 07.04.2023 को दोपहर 2.00 बजे तक जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित,सिवनी, बस स्टेंड के पास सिवनी में आमंत्रित की जाती है। नियम एवं षर्तो का अवलोकन प्रधान कार्यालय सिवनी में किया जा सकता है।

प्र. मुख्य कार्यपालन अधिकारी
जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्या. सिवनी

मतदाता सूची वार्षिक पुनरीक्षण की स्टैण्डिंग कमेटी की बैठक आज

छतरपुर। म.प्र. राज्य निर्वाचन आयोग भोपाल ने नगरीय निकायों एवं त्रि-स्तरीय पंचायतों की फोटोयुक्त मतदाता सूची के वार्षिक पुनरीक्षण 2023 हेतु मतदाता सूची तैयार किए जाने का निर्धारित कार्यक्रम घोषित किया गया है, जिसकी कार्यवाही प्रचलित है। अपर कलेक्टर एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी छतरपुर ने बताया कि आयोग के निर्देशानुसार स्टैण्डिंग कमेटी का गठन किया जा चुका है। स्टैण्डिंग कमेटी के सदस्यों एवं राजनैतिक दलों के पार्टी अध्यक्षों की बैठक 6 अप्रैल दोपहर 02रू00 बजे कलेक्ट्रेट कार्यालय के सभाकक्ष में आयोजित की जा रही है। सभी से उक्त बैठक में उपस्थित होने की अपील की गई है।

मध्यप्रदेश में निजी स्कूलों को लूट की खुली छूट

8 से 15 हजार रुपए तक मिल रही कॉपी-किताब, मंत्री जी को सुध ही नहीं

अजय छाबरिया (द सूत्र)। मध्यप्रदेश में नया शैक्षणिक सत्र शुरू हो गया है। नए सत्र के साथ ही प्राइवेट स्कूलों की मनमानी भी शुरू हो गई है। स्कूल और दुकानदारों के गठजोड़ ने अभिभावकों की जेब पर अतिरिक्त बोझ डाल दिया है। अब आप समझिए कि ये बोझ कैसे डाला जा रहा है। नियमों के खिलाफ होने पर भी प्राइवेट स्कूल पेरेंट्स से बच्चों की कॉपी-किताबें तय बुक स्टोर से ही खरीदने का बोल रहे हैं। निर्धारित दुकान पर कॉपी-किताबों के मनमाने तरीके से दाम वसूले जा रहे हैं। कुछ स्कूल तो इससे भी एक कदम आगे हैं। वे स्कूल से ही कॉपी-किताब बांट रहे हैं। नतीजा एक ही क्लास की कॉपी-किताब 8 हजार से लेकर 15 हजार तक मिल रही हैं।

आंखें बंद करके बैठा प्रशासन

दिक्कत ये भी है कि प्राइवेट स्कूल जानबूझकर अलग-अलग महंगे पब्लिशर्स की किताब सिलेबस में रखते हैं। जिससे निर्धारित बुक्स शॉप के आलावा वो बाजार में किसी अन्य दुकान पर मिलती ही नहीं है। आप सोच रहे होंगे कि इतना सब कैसे हो रहा है। इस पूरी कहानी के पीछे का राज है कि प्रशासन का आंख बंद करके बैठा है और प्राइवेट स्कूल एनसीईआरटी की जगह अन्य दूसरे पब्लिशर्स की महंगी किताबें बच्चों को पढ़ा रहे हैं।

कमीशन की वजह से हर साल बदलता है सिलेबस

परिचित कहीं एक-दूसरे से पुस्तकों का आदान-प्रदान ना कर लें, इसलिए प्राइवेट स्कूल हर साल सिलेबस को ही बदल देते हैं। इन पुस्तकों से स्कूलों का सीधे तौर पर मोटा कमीशन जुड़ा रहता है। कमीशन का ये खेल इतना बढ़ा है कि सरकारी आदेश के बावजूद कुछ स्कूल तो एनसीईआरटी की बुक ही नहीं चला रहे हैं।

नियमों में कई पेंच

जिला शिक्षा अधिकारी यानी डीईओ को सीबीएसई संबद्ध निजी स्कूलों की मनमानी पर रोक लगाने के लिए म.प्र. निजी विद्यालय फीस अधिनियम 2017 के तहत पावर दिया गया है। इस एक्ट की धारा-6 में बुक और स्टेशनरी से संबंधित दिशा-निर्देश तो दिए हैं, लेकिन एनसीईआरटी शब्द का कहीं कोई उपयोग नहीं किया गया। मतलब एक्ट ये तो कहता है कि बुक और स्टेशनरी जैसी अन्य सामग्री सार्वजनिक प्रदर्शित की जाए, लेकिन स्कूल में एनसीईआरटी की बुक चलाना अनिवार्य है या किसी कक्षा में कम से कम इतनी बुक एनसीईआरटी की होना जरूरी है। ऐसा कहीं कोई उल्लेख ही नहीं है।

फिक्स दुकानों से खरीदकर लुट रहे हैं पेरेंट्स

फिक्स दुकानों से कॉपी-किताबें खरीदकर पैरेंट्स लुट रहे हैं। अब द सूत्र ने एक ही कक्षा चौथी की कॉपी-किताब की जानकारी ली तो अलग-अलग स्कूलों के अलग अलग रेट सामने आए। द सूत्र ने जब भारत बुक्स स्टेशनरी जवाहर चौक रोड पर पहुंचकर पड़ताल की तो दुकान के एक कर्मचारी ने बताया कि डीपीएस स्कूलों की कक्षा-4 की कॉपी-किताबें 8 हजार रुपए की आएगी। इसके अलावा एक और दुकान बुक्स एंड बुक्स कोलार रोड पर है। इस दुकान पर भी दामों की पड़ताल की तो सागर पब्लिक स्कूल की कक्षा-4 की सिर्फ किताबें 3 हजार 960 रुपए की बताई गई, इसमें कॉपी की राशि शामिल नहीं है। वहीं आर्केड स्कूल तो किसी बुक्स शॉप से नहीं बल्कि स्कूल से ही कॉपी किताब दे रहा है। जिसमें कक्षा-4 की कॉपी-किताबों के दाम देखें जाएं तो 14 हजार 525 रुपए है।

एनसीईआरटी की खरीदें तो 250 रुपए में आ जाएंगी

अभिभावक नरेंद्र का कहना है कि मेरा बच्चा एमजीएम स्कूल में कक्षा-3 में पढ़ता है। उसकी किताबें ही 3 हजार रुपए की हैं। इसमें कॉपी के दाम शामिल नहीं हैं। अगर ये ही किताबें एनसीईआरटी की खरीदें तो 250 रुपए में आ जाएंगी।

सोशल मीडिया पर जमकर विरोध

राजधानी भोपाल में भोपाल सिटी लाइव नाम का एक सोशल फेसबुक पेज है जो काफी एक्टिव भी रहता है। हाल ही में विजयराज सिंह चौधरी ने शिक्षा के नाम पर लूट जारी है टाइटल से क्रीन मेरीज सीनियर सेकेंडरी स्कूल और भोपाल की एक बुक शॉप रागनी बुक्स एंड स्टेशनरी के बिल अपलोड किए, जिसमें कक्षा चौथी की कॉपी किताब 4 हजार 353 और आठवीं की कॉपी किताब 5 हजार 198 बताई गई। इस पोस्ट पर लोगों ने अपनी तीखी प्रतिक्रिया भी व्यक्त की। संदीप किशोर उमरिया ने लिखा कि धंधा बनाकर रखा है। सचिन जैन ने लिखा कि ये पोस्ट डालने से क्या होगा दुखी मन सबका है। ना कांग्रेस को चिंता, ना बीजेपी को। वहीं एक अन्य यूजर्स रमेश तिवारी ने कमेंट किया कि आर्किड आया है, उसकी बुक्स कॉपी का रेट आप देख लेंगे तो हिल जाएंगे।

आदेश पर आदेश निकले पर, पालन एक का भी नहीं

सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन यानी सीबीएसई ने 12 अप्रैल 2016 और 19 अप्रैल 2017 को स्कूलों से ही या चयनित दुकानों से पुस्तकें, स्टेशनरी, यूनिफॉर्म, स्कूल बैग खरीदने के संबंध में आदेश जारी किया था, जिसमें कहा गया कि बच्चों और उनके पालकों पर चयनित दुकान या किसी चयनित निजी प्रकाशक की पुस्तकों को खरीदने का दबाव नहीं बनाया जा सकता। वहीं इन्हीं आदेशों का हवाला लेकर 31 मार्च 2018 को स्कूल शिक्षा विभाग मध्यप्रदेश ने भी सभी कलेक्टर्स को पत्र लिखकर आदेशित किया कि म.प्र. निजी विद्यालय फीस अधिनियम 2017 के अंतर्गत ऐसे स्कूलों पर कार्रवाई की जाए जो लाभ कमाने के लिए पालकों पर महंगी पुस्तकें, स्कूल ड्रेस और एक चयनित दुकान से ही खरीदने का दबाव बना रहे हैं, पर इन आदेशों का कभी पालन नहीं हुआ।

सीबीएसई के आदेश का कितना पालन

सभी कक्षाओं में एनसीईआरटी की किताबें अनिवार्य करने एवं संख्या निर्धारित करने का अधिकार सिर्फ केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड नई दिल्ली का है। मध्य प्रदेश शासन स्कूल शिक्षा विभाग, मध्य प्रदेश द्वारा निजी सीबीएसई स्कूलों में एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित पुस्तकें लागू करने के संबध में 31 मार्च 2018 के पत्र में निर्देश दिए गए थे कि निजी सीबीएसई स्कूलों में सभी कक्षाओं में एनसीईआरटी की पुस्तकें लागू की जाएं, लेकिन आदेश का पूरी तरह पालन ही नहीं किया जा रहा है।

20 से ज्यादा स्कूलों को नोटिस का दावा

जिला शिक्षा अधिकारी नितिन सक्सेना का दावा है कि 20 स्कूलों पर स्वतः संज्ञान के आधार पर नोटिस जारी कर दिया है। जिसके ऑर्डर कलेक्टर ने निकाल दिए हैं। अगर सभी प्राइवेट स्कूल एनसीईआरटी कि किताबें लागू कर दें तो 1 हजार 500 से ज्यादा की किताबें नहीं आएगी। इसके संबंध में सीबीएसई के डायरेक्टर से बात करें तो अच्छा रहेगा। हम लोग केवल लिस्ट देख सकते हैं और स्कूल वाले क्या चला रहे हैं, ये देख सकते हैं। कार्रवाई के लिए सीबीएसई के डायरेक्टर से आपको बात करनी पड़ेगी।

नियम में स्वतः संज्ञान का पावर

जिला शिक्षा अधिकारी को नियम के आधार पर स्वतः संज्ञान लेने के साथ जांच का भी अधिकार है, लेकिन जिम्मेदार हाथ पर हाथ धरे बैठकर अभिभावकों की शिकायत का इंतजार कर रहे हैं। पालक महासंघ के महासचिव प्रबोध पांडेय का कहना है कि इस बार किताबों के दाम 45 फीसदी बढ़ा दिए गए हैं। पालक बहुत परेशान हैं, खुलेआम लूटा जा रहा है। सरकार का सरंक्षण है इसके कारण ये चल रही है। सरकार ना चाहे तो ये कैसे चला पाए।

नियमों की उड़ रहीं धज्जियां और मंत्री जी का अलग ही अलाप

फीस एक्ट की धारा-6 की उपधारा-1 के तहत प्राइवेट स्कूलों को कॉपी-किताबों से लेकर पूरी पठनीय सामग्री को वेबसाइट पर अपलोड करना अनिवार्य है, लेकिन प्रदेश के अधिकांश स्कूल इस नियम का पालन नहीं करते और जब मंत्री जी से सवाल किया जाता है तो वे अपना अलग ही राग अलापने लगते हैं। उनसे सवाल पूछा जाता है, बेलगाम हो चुके स्कूलों की मनमानी का, मंहगी कॉपी-किताबों का और मंत्री जवाब देते हैं पांचवीं-आठवीं बोर्ड होने का और आठवीं तक किसी को फेल नहीं करने का।

स्कूल शिक्षा मंत्री ने दिया गोलमोल जवाब

स्कूल शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार का कहना है कि पहले के नियम ऐसे थे जिनके कारण बच्चे को 9वीं क्लास तक कोई नहीं रोकेगा। आगे तक बढ़ाने का काम चलता रहा। इस कारण से प्राइवेट सेक्टर के लोग अपने हिसाब की किताबें और अपने हिसाब से सारी व्यवस्थाएं करते रहे और जो सरकार की किताबें होती थीं, उनसे ज्यादा मूल्य की थी। लेकिन हमने तय कर दिया है कि पांचवीं और आठवीं की परीक्षाएं बोर्ड पैटर्न के हिसाब से होंगी। जो एनसीईआरटी के आधार पर संचालित होंगी। उस आधार पर होंगी।

नियम का उल्लंघन करते हैं प्राइवेट स्कूल

हाईकोर्ट अधिवक्ता शैलेश बावा ने बताया कि नियम होने के बाबजूद भी निजी स्कूल उसका उल्लंघन करते हैं। कोई भी स्कूल या संस्था अभिभावकों को किसी एक दुकान से किताब खरीदने के लिए बाध्य नहीं कर सकता है। अगर कोई स्कूल ऐसा करता है तो उसकी शिकायत जिला शिक्षा अधिकारी के पास की जा सकती है। इसके अलावा जिला समिति में भी अपनी शिकायत दर्ज करवाई जा सकती है।

भारत में सेवा क्षेत्र की गतिविधियां मार्च में धीमी पड़ी: पीएमआई

नयी दिल्ली, एजेंसी। भारत में सेवा क्षेत्र की गतिविधियां मार्च में धीमी पड़ गईं, जो फरवरी में 12 साल के उच्च स्तर पर पहुंच गई थीं। एक सर्वेक्षण में बुधवार को बताया गया कि नए कारोबारी ठेके मिलने की रफ्तार धीमी रहना इसकी वजह है।

मौसमी रूप से समायोजित एसएंडपी ग्लोबल भारत सेवा पीएमआई कारोबारी गतिविधि सूचकांक फरवरी के 59.4 से घटकर मार्च में 57.8 हो गया। सेवा पीएमआई का सूचकांक लगातार 20वें महीने 50 से ऊपर बना हुआ है। खरीद प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) की भाषा में 50 से ऊपर अंक का मतलब है कि गतिविधियो में विस्तार हो रहा है, जबकि 50 से कम अंक संकुचन को दर्शाता है।

स्पिनी ने सचिन, अनिल कुम्बले और युवराज सिंह के साथ लॉन्च किया नया आईपीएल कैंपेन

मुंबई, एजेंसी। भारत में सैकण्ड हैण्ड कारों की खरीद-बिक्री के लिए के लिए जाने-माने प्लेटफॉर्म स्पिनी ने अपने निवेशक एवं कैप्टन सचिन तेंदुलकर तथा क्रिकेट जगत के अन्य दिग्गजों जैसे अनिल कुम्बले और युवराज सिंह के साथ नए आईपीएल कैम्पेन का लॉन्च किया है। कैंपेन के वीडियोज़ आईपीएल 2023 के दौरान रिलीज़ किए जाएंगे, जिसका आयोजन 31 मार्च से 28 मई 2023 के बीच होना है। यह कैंपेन ब्राण्ड की टैगलाईन 'गो फार' पर आधारित है जो बताता है कि किस तरह लोग अपने प्यार के लिए, अपने सपनों के लिए क्या-क्या कर जाते हैं, साथ ही आईपीएल की सच्ची भावना को भी प्रदर्शित करता है। ''गो फार फार यॉर स्क्रैड' के तहत क्रिकेट के ये दिग्गज स्पिनी एसयूवी में रोड ट्रिप पर निकल जाते हैं। कैंपेन एवं एसोसिएशन के बारे में बात करते हुए सचिन तेंदुलकर ने कहा, ''स्पिनी भरोसे, पारदर्शिता जैसे मूल्यों के साथ उपभोक्ताओं को सैकण्ड हैण्ड कारों की खरीद-बिक्री का बेहतरीन अनुभव प्रदान करता है। कार प्रेमी होने के नाते, इस कैंपेन के लिए काम करना बड़ा ही मज़ेदार था। इस बार हमने युवराज और अनिल को भी इस ट्रिप पर लेजाने का फैसला लिया।

हिंदवेयर लिमिटेड ने पंजाब किंग्स और रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के साथ की साझेदारी

नई दिल्ली, एजेंसी। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल), जो कि सबसे बड़े खेल आयोजनों में से एक और दुनिया भर में क्रिकेट फैंस के लिए एक ख़ास कार्यक्रम है, 31 मार्च, 2023 से अपने 16वें एडिशन की शुरुआत कर चुका है। इसके साथ ही हिंदवेयर लिमिटेड, जो कि कम्पलीट बाथरूम सोल्यूशंस में एक लीडर है ने, आगामी 2023 सीज़न के लिए इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की दो सबसे बड़ी टीमों - पंजाब किंग्स और रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के साथ अपनी साझेदारी की घोषणा करते हुए बेहद रोमांचित है। यह स्ट्रेटेजिक साझेदारी हिंदवेयर को देश भर के क्रिकेट फैंस के साथ अपने ब्रांड की विज़िबिलिटी और इंगेजमेंट को मजबूत करने में सक्षम बनाएगी। इस साझेदारी के बारे में बात करते हुए श्री सुधांशु पोखरियाल, चीफ एक्सिक्यूटिव ऑफिसर, बाथ एंड टाइल्स, हिंदवेयर लिमिटेड ने कहा क्रिकेट एक ऐसा खेल है जो पूरे देश को एक थ्रिलिंग (रोमांचकारी) स्पोर्टिंग एक्शन से जोड़ता है जो कि दुनिया भर के तमाम भारतीयों के लिए किसी दावत से कम नहीं है।

हम पंजाब किंग्स और रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के साथ जुड़कर बेहद खुश हैं। इस सिनर्जिक पार्टनरशिप के जरिये, हम अपने दर्शकों के साथ और अधिक जुड़ने की आशा करते हैं। इसके अलावा हमें पूर्ण विश्वास है कि यह साझेदारी हमें अपने ब्रांड की उपस्थिति को मजबूत करने और अत्यधिक प्रतिस्पर्धी बाथरूम सोल्यूशन के मार्किट में ग्रोथ (विकास) को गति देने में मदद करेगी। चारू मल्होत्रा, वाईस प्रेसिडेंट, मार्केटिंग, हिंदवेयर लिमिटेड ने आगे कहा,आईपीएल 2023 के लिए पंजाब किंग्स और रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के साथ इस साझेदारी को करके हम बेहद रोमांचित महसूस कर रहे हैं। इसके साथ ही यह साझेदारी हिंदवेयर को देश भर के लाखों क्रिकेट फैंस के साथ जुड़ने का एक अनूठा अवसर भी प्रदान करती है।

एप्पल के रिटेल स्टोर की भारत में एंट्री, सामने आई पहली तस्वीर

नयी दिल्ली, एजेंसी। भारत में एप्पल के दीवानों को जिस घड़ी का इंतजार था, अब वह आ गई है। बहुत जल्द ऐप्पल भारत में अपना पहला रिटेल स्टोर खोलने जा रही है। इस रिटेल स्टोर की शुरुआत के साथ ही कंपनी की भारतीय बाजार में ऑफलाइन एंट्री हो जाएगी। एप्पल ने अपने पहले रिटेल स्टोर के लिए देश की आर्थिक राजधानी मुंबई को चुना है। आज यानी बुधवार को अमेरिकी टेक दिग्गज एप्पल ने मुंबई के जियो वर्ल्ड ड्राइव मॉल में अपने पहले रिटेल स्टोर के बैरिकेड से पर्दा उठाया। इसे हम ऑफिसियल एप्पल बीकेसी के आगामी उद्घाटन के रूप में देख सकते है।

मायानगरी मुंबई की आईकॉनिक काली-पीली टैक्सी कला से प्रभावित होकर एप्पल बीकेसी ने अपने क्रिएटिव में कई एप्पल प्रोडक्ट्स और सर्विसेज की रंगीन चित्रकला को विभिन्न सरफेस पर उकेरा हैं जो ग्राहकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए पूरी तरह से तैयार है। एप्पल ने एक बयान में कहा, स्टोर के क्रिएटिव क्लासिक ऐप्पल ग्रीटिंग हैलो मुंबई से गुजरने वाले लोगों का स्वागत करेंगे। नए स्टोर के उद्घाटन का जश्न मनाने के लिए, विजिटर्स नए एप्पल बीकेसी वॉलपेपर डाउनलोड कर सकते हैं और एप्पल म्यूजिक पर विशेष रूप से क्यूरेट की गई प्लेलिस्ट के

साथ 'मुंबई की आवाज़ों' का आनंद ले सकते हैं।

चुनौतीपूर्ण वैश्विक परिस्थितियों के बीच भारत एप्पल के लिए एक चमकदार बाजार है। कंपनी सरकार की 'मेक इन इंडिया' पहल के अनुरूप देश में घरेलू मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देने का प्रयास कर रही है। वर्ष 2021 में कोविड-19 की शुरुआत के बाद से ग्लोबल सप्लाई चेन में आई रुकावटों (विशेष रूप से चीन में) के कारण कंपनी ने भारत में निर्माण के अपने प्रयासों को दोगुना कर दिया है। आईडीसी के एसोसिएट वाइस प्रेसिडेंट नवकेंदर सिंह ने कहा, 'हालांकि एप्पल ने भारत में अपना स्टोर खोलने के लिए समय लिया है, यह अब पहले से कहीं अधिक समझ में आता है। अब भारतीय उपभोक्ता परिपक्व हो रहे है और अधिक खर्च कर रहे हैं, विशेष रूप से प्रीमियम सेगमेंट में, जो भारत को प्रोडक्ट्स और सर्विस सेक्टर में अगले दशक में एप्पल के लिए अगला बड़ा बाजार बनाता है। बाजार में गिरावट के बावजूद आईफोन निर्माता के स्मार्टफोन व्यवसाय में भारत में तेजी देखी गई है। प्रीमियम सेगमेंट में, एप्पल ने 60 फीसदी बाजार हिस्सेदारी के साथ अपना दबदबा बनाए रखा है।

ओला ने अपने फिज़िकल फुटप्रिंट बढ़ाए

पूरे देश में एक ही दिन में 50 एक्सपीरियंस सेंटर खोले, पहला एक्सपीरियंस सेंटर होशंगाबाद में खोला

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत की सबसे बड़ी इलेक्ट्रिक वाहन कंपनी, ओला इलेक्ट्रिक ने एक ही दिन में देश में 50 एक्सपीरियंस सेंटर खोले हैं। यह इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए देश में अपने एक्सपीरियंस सेंटर खोलते हुए लोगों के लिए अपनी उपलब्धता एवं सेवाएं आसान बना रहा है। कंपनी ने होशंगाबाद में रसुलिया रोड, एसपीएम कॉलोनी, नर्मदापुरम में नए ओला एक्सपीरियंस सेंटर की शुरुआत के साथ अपने डी2सी फुटप्रिंट के विस्तार की घोषणा की है।

अंशुल खंडेलवान, चीफ मार्केटिंग ऑफिसर, ओला ने कहा, ''लोगों का अनुभव ज्यादा सुगम और दिलचस्प बनाने के लिए हम देश के सभी मुख्य शहरों में अपना ऑफलाईन विस्तार कर रहे हैं। हमारा मानना है कि अपने ऑफलाईन विस्तार की गति को बढ़ाना जरूरी है, ताकि देश के दूरदराज के इलाकों में स्थित लोग भी हमारे वाहनों और सेवाओं का सुगम अनुभव पा सकें।'' ओला के एक्सपीरियंस सेंटर एक ही स्थान से ग्राहकों को सेवाओं की विस्तृत श्रृंखला प्रदान करने के लिए डिज़ाईन किए गए हैं। ओला के लगभग 90 प्रतिशत ग्राहक ओला एक्सपीरियंस सेंटर के 20 किलोमीटर के दायरे में होते हैं।

फ्लिपकार्ट ने किराना सदस्यों के लिए अपने फ्लैगशिप ऑम्नीचैनल अभियान 'व्यापारी दिवस' का लेटेस्ट संस्करण लॉन्च किया

टैगलाईन 'टूटेगा फायदे का रिकॉर्ड' के साथ पहली बार सदस्यों को हर खरीद पर 9,999 रु. तक का निश्चित कैशबैक और बाय वन गेट वन, व्यापारी दिवस स्पेशल्स, डिस्कवरी ज़ोन जैसी आकर्षक डील मिलेंगी

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत के होमग्रोन फ्लिपकार्ट ग्रुप के डिजिटल बी2बी प्लेटफॉर्म, फ्लिपकार्ट होलसेल ने आज कंपनी की वार्षिक फ्लैगशिप ईवेंट, 'व्यापारी दिवस' के लॉन्च की घोषणा की है। इस फ्लैगशिप ईवेंट का उद्देश्य सदस्यों के लिए बचत और लाभ बढ़ाना है। 03 अप्रैल से 09 अप्रैल, 2023 तक चलने वाला यह अभियान फ्लिपकार्ट होलसेल के सभी स्टोर्स और फ्लिपकार्ट होलसेल ऑनलाईन प्लेटफॉर्म/मोबाईल एप्लीकेशन पर उपलब्ध होगा। इसमें सदस्यों को विभिन्न श्रेणियों, जैसे मुख्य आहार, व्यक्तिगत और होम केयर, फूड एवं बेवरेज आदि में आकर्षक डील्स मिलेंगी।

टैगलाईन 'टूटेगा फायदे का रिकॉर्ड', के साथ इस अभियान में विभिन्न आकर्षक ऑफर जैसे डिस्कवरी ज़ोन, व्यापारी दिवस स्पेशल्स, बाय वन गेट वन ऑफर, फ्लैश डील्स तैयार किए गए हैं। इसके अलावा, पहली बार सदस्यों को फ्लिपकार्ट होलसेल ऐप और इन-स्टोर खरीद पर 9,999 रु. का निश्चित कैशबैक दिया जाएगा।

फ्लिपकार्ट होलसेल के बिज़नेस हेड, कोटेश्वर

एलएन ने कहा, ''किराना एवं एमएसएमई को वृद्धि एवं समृद्धि प्रदान करने वाला एक सस्टेनेबल बिज़नेस स्थापित करने की हमारी प्रतिबद्धता के साथ फ्लिपकार्ट होलसेल में हम टेक्नॉलॉजी और मर्चेंडाईज़िंग एवं लॉजिस्टिक्स इन्फ्रास्ट्रक्चर में अपनी गहरी विशेषज्ञता का उपयोग कर रहे हैं। इससे कंपनी अपने सदस्यों को विस्तृत उत्पाद संग्रह काफी कम मूल्य में प्रदान करने में समर्थ बनी है, ताकि उन्हें अपने व्यवसायिक निर्णय आत्मविश्वास के साथ लेने में मदद मिले। हम 'व्यापारी दिवस' का लेटेस्ट संस्करण पेश करने के लिए उत्साहित हैं, जो सदस्यों को और ज्यादा बड़ी एवं बेहतर बचत प्रदान करेगा।

फ्लिपकार्ट होलसेल टेक्नॉलॉजी की निपुणता और बाजार की गहरी समझ ने किराना एवं एमएसएमई को विकास का समग्र परिवेश प्रदान किया है। इस प्लेटफॉर्म के विस्तृत नेटवर्क द्वारा एसएमई ब्रांड्स को पूरे भारत के बाजार की विज़िबिलिटी और पहुँच मिलेगी। अपने डिजिटल-फर्स्ट दृष्टिकोण के साथ यह प्लेटफॉर्म अनेक फायदेमंद सौदे पेश करता है, जिनसे छोटे ब्रांड्स आत्मविश्वास के साथ व्यवसायिक निर्णय लेने में मदद मिलेगी।

एक्सोन मोबिल ल्यूब्रीकेंट मैन्युफैक्चरिंग प्लांट की स्थापना भारत में

भारत में ल्यूब्रीकेंट की बढ़ती मांग को पूरा करने में सहायता के लिए इस नयेप्लांट से प्रति वर्ष159,000 किलोलीटर तैयार ल्यूब्रीकेंट का उत्पादन होने की उम्मीद

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र एक्सोन मोबिल ने कहा कि वह महाराष्ट्र औद्योगिक विकास निगम केरायगढ़स्थित इसाम्बे औद्योगिक क्षेत्र में एक ल्यूब्रीकेंट निर्माण संयंत्र बनाने के लिए लगभग 900 करोड़ रुपये (110 मिलियन अमरीकी डालर) का निवेश कर रहा है। कंपनी ने उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, उद्योग मंत्री उदय सामंत एवंमहाराष्ट्र के वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगीमें यह घोषणा की। एक बार परिचालन शुरू होने पर,इस प्लांट में वर्ष में 159,000 किलो लीटर ल्यूब्रीकेंट्स तैयार करने की क्षमता है, जिससे औद्योगिक क्षेत्रों जैसेनिर्माण, इस्पात, बिजली, खनन,यात्रा एवं वाणिज्यिक वाहनों की बढ़ती घरेलू मांग को पूरा किया जाएगा।यहप्लांट वर्ष 2025के अंत में शुरू होने की उम्मीद है।

भारत में एक्सोन मोबिल एफिलिएट्स के लीड कंट्री

मैनेजर मोंटी डॉब्सन ने कहा हम भारत के साथ अपने पहले ग्रीन फील्ड निवेश के क्षेत्र में दीर्घकालिक प्रतिबद्धता को और अधिक मज़बूत बनाने पर गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। महाराष्ट्र भारत कासबसे बड़ा निर्माण केंद्र है और शानदार निवेश वातावरण होने के कारण हमारे ल्यूब्रीकेंट प्लांट की स्वभाविक पसंद है।

मेक इन इंडिया पहल को पर्याप्त बढ़ावा देने हेतु,स्थानीय स्तर पर यह प्लांट मूल स्टॉक, एडिटिव्स और सभी पैकिंग का एक प्रमुख स्रोत होगा। इसके निर्माण चरण के दौरानलगभग 1,200 पद सृजित होने का अनुमान है।

विपिन राणा, सीईओ, एक्सोन मोबिल ल्यूब्रीकेंट्स प्राइवेट लिमिटेड ने कहा, यह उच्च प्रदर्शन करने वाले ल्यूब्रीकेंट भारत के अग्रणी प्रदाता के रूप में हमारी स्थिति को और मज़बूत करने की दिशा में एक कदम है। यह निर्माण स्थानीय स्तर पर हमारी आपूर्ति श्रृंखला को आसान बनाएगा, जिससे हम अपने भारतीय ग्राहकों और उपभोक्ताओं की जरूरतों को अधिक सरलता के साथ पूरा कर सकेंगे। हम भारत के विकास की कहानी में मदद करने हेतु अपनी बढ़ती भूमिका को लेकर अत्यधिक उत्साहित हैं।

ल्यूब्रीकेंट टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में एक ग्लोबल लीडर के रूप में, एक्सोन मोबिल के मोबिल-ब्रांड वाले इंजन ऑयल, ग्रीस और ल्यूब्रीकेंट की व्यापक रेंज दशकों से भारत के ऑटोमोटिव और औद्योगिक क्षेत्रों के लिए ऊर्जा दक्षता, उत्पादकता और स्थिरता को आगे बढ़ा रही है। कंपनी भारत में तरल प्राकृतिक गैस की एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता कंपनी भी है और इसके रासायनिक उत्पादों का भारतीय निर्माण में व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाता है।

हनुमान जयंती आज

विश्वासधर्मी गायत्री परिवार के बीच आकर मैं धन्य हुआ: कमलनाथ

विराट 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में पहुंचे प्रदेश अध्यक्ष

छिन्दवाड़ा । हमारे सामाजिक मूल्य ही हमारी पूंजी है और हमारी सबसे बड़ी शक्ति हमारी आध्यात्मिक शक्ति है, इसी पूंजी और इसी शक्ति के बल पर हमारा भारत सम्पूर्ण विश्व में अपनी अलग पहचान रखता है। इन शक्तियों को और अधिक विस्तार करने में जुटे ऐसे विश्वासधर्मी गायत्री परिवार के बीच आकर मैं धन्य हुआ।उक्त उदगार आज स्थानीय मधुबन कॉलोनी स्थित श्री गायत्री माता मंदिर परिसर में आयोजित विराट 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के पुनीत अवसर पर यज्ञस्थल व मंदिर पहुंचे प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने व्यक्त किये। अपने सारगर्भित उदबोधन में कमलनाथ ने कहा कि मैं पिछले 44 वर्षों से गायत्री परिवार से जुड़ा हूं और इन वर्षों में मुझे आपने मुझे भी अपने परिवार का सदस्य मानकर भरपूर आशीर्वाद दिया हैं। कमलनाथ ने मंदिर परिसर में स्थित गायत्री गायत्री महाविज्ञान एवं ध्यान साधना केन्द्र का अवलोकन किया। यज्ञस्थली भ्रमण कर मंदिर में पूजा अर्चना के उपरांत उपस्थित गायत्री परिवार के सदस्यों को सम्बोधित करते हुये श्री नाथ ने कहा क मैं अपनी माताओं, बहनों एवं परिवार के बुजुर्गों के प्रति भी अपना आभार व्यक्त करना हूं जिन्होंने आज के युग में भी अपनी पीढ़ियों को हमारे सामाजिक मूल्यों से अवगत कराया है और नई पीढ़ी भी इसका अनुसरण कर रही है। युवा पीढ़ी भी समझ रही है कि हमारा परिवार सामाजिक मूल्यों का धनी परिवार है। श्री गायत्री माता मंदिर परिसर में दर्शन पूजन उपरांत य आयोजन समिति ने कमलनाथ का अंग वस्त्र पहनाकर अभिनंदन किया। श्री नाथ ने इस अवसर पर कहा कि मां गायत्री की उन पर असीम अनुकंपा है। ऐसे ऐतिहासिक धार्मिक आयोजन और अनुष्ठान में सम्पूर्ण सहयोग हेतु वे सदैव तत्पर है। कमलनाथ के साथ में प्रदेश के पूर्वमंत्री दीपक सक्सेना, प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष गंगा प्रसाद तिवारी, जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष विश्वनाथ ओक्टे, महापौर विक्रम अहके, निगम अध्यक्ष सोनू मागो, शहर कांग्रेस अध्यक्ष पंकज शुक्ला, सेवादल जिला अध्यक्ष सुरेश कपाले, युवा कांग्रेस अध्यक्ष एकलव्य यहके, शैलू सेंगर, एनएसयूआई अध्यक्ष अजय सिंह ठाकुर, पप्पू यादव, प्रबल सक्सेना, विश्वेन्द्र सिंह बैस सहित बड़ी संख्या में कांग्रेसगण उपस्थित रहे।

रोजदारों के साथ अफ्तार किया नकुल-कमलनाथ ने

छिन्दवाड़ा। प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ व जिले के सांसद नकुलनाथ ने स्थानीय ईद मिलादुन्नवी मैदान में उपस्थित होकर समस्त रोजदारों के साथ रोजा अफ्तार किया। विदित हो कि पवित्र रमजान माह का आज तेरहवां रोजा रहा। स्थानीय ईद मिलादुन्नवी मैदान में हाजी जमालउद्दीन लाल साहब द्वारा विगत दो दशकों से अफ्तार पार्टी का आयोजन किया जाता रहा है। इस कार्यक्रम में कमलनाथ ने हमेशा अपनी उपस्थित दर्ज कराई है।

भ्रष्टाचारियों का सम्मान करना कमलनाथ की फितरत

स्वेच्छा अनुदान राशि का कर रहे दुरुपयोग !

छिंदवाड़ा । छिंदवाड़ा के विधायक और पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ भ्रष्टाचारियों को और उनके परिवारों को सम्मानित करके भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे हैं । भ्रष्टाचारियों का सम्मान करना कमलनाथ की फितरत रही है । उक्त आशय का आरोप लगाते हुए पार्षद श्रीमती शोभना संतोष राय ने कमलनाथ पर स्वेच्छा अनुदान की राशि का दुरुपयोग करने का भी आरोप लगाया है । श्रीमती शोभना राय ने बताया कि वार्ड क्रमांक दो में भ्रष्टाचार के आरोप में सेवा से बर्खास्त कर्मचारी को प्रश्रय देकर शासकीय आवास पर कब्जा कर रहने के लिए एस ए एफ कमांडेंट पर दबाव डाला जा रहा है । एस ए एफ के बर्खास्त कर्मचारी सिपाही राजेंद्र सैनी पर लाखों रुपए का गबन करने का आरोप सिद्ध होने पर कर्मचारी को सेवा से बर्खास्त किया गया है । लेकिन कमलनाथ और उनके सिपहसालार भ्रष्ट कर्मचारियों का समर्थन करते हुए उन्हें विधायक मद के स्वेच्छा अनुदान राशि से सम्मानित भी कर रहे हैं । भ्रष्टाचार के मामले में कमलनाथ के रिश्तेदार और स्वयं कमलनाथ भी लिप्त रहे हैं । उनके मुख्यमंत्रीत्व काल में दिल्ली स्थित उनके बंगले से करोड़ों रुपए का लेनदेन करने के अनेकों वीडियो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर वायरल हो चुके हैं । छिंदवाड़ा में सिंचाई कॉम्प्लेक्स के नाम पर 500 करोड़ रुपए का भी अग्रिम भुगतान में भ्रष्टाचार के आरोप कमलनाथ पर लग चुके हैं ऐसे में यह स्वयं सिद्ध है कि कमलनाथ भ्रष्टाचारियों का सम्मान करते हैं और उन्हें संरक्षण प्रदान करते हैं शोभना राय ने बर्खास्त कर्मचारी को संरक्षण देने के संबंध में एस ए एफ कमांडेंट से निवेदन किया है बर्खास्त कर्मचारी का जो कब्जा अवैधानिक रूप से शासन के मकान पर किया है, उसे तत्काल हटाया जाना चाहिए अन्यथा भारतीय जनता पार्टी को उसके विरुद्ध आंदोलन के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

कमलनाथ ने कहा मैं किसान का बेटा नहीं, फिर किसानों का दर्द क्या समझेंगे कमलनाथ: संजय पटेल

छिंदवाड़ा।पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने आखिरकार स्वीकार ही लिया कि वो किसान के बेटे नहीं है एक बड़े उद्योगपति है। एक उद्योगपति किसान का दर्द नहीं समझ सकता 7 बार बार जनता के अपमान के साथ अब किसानों का भी अपमान कर रहे है। कमलनाथ कहते है कि मैं किसान का बेटा नहीं हूं। आप किसान के बेटे हो भी नहीं सकते,क्योंकि आप किसान का दर्द नहीं समझते मिट्टी की सुगंध आपको नहीं मालूम इसलिए आप किसानों को कर्जा माफी का वादा कर मुकर गए थे। उक्त बात भाजपा किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष संजय पटेल ने जारी प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से कहा। भाजपा किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष संजय पटेल ने आगे कहा कि कमलनाथ कहते है कि मैं चायवाला नहीं हू। मै मामा नहीं हूं। मैं कहता हू कमलनाथ जी आप चायवाला भी नही हो सकते आप सोने की चम्मच लेकर औद्योगिक घराने में पैदा हुए हो।आप कार्पोरेट राजनीति करते है,सबको नौकर समझते है।मौका मिलते ही जनता को लुटते है। छिंदवाड़ा को राजनीति की औद्योगिक फैक्ट्री बना रखा है। राजनीति आपके लिए बिजनेस है। शायद इसलिए सवा साल की सरकार में आपने ट्रांसफर उद्योग चलाया था।आप कहते है मै मामा नहीं हूं। मै जानता हूँ आप बहिन बेटियो की इज्जत नहीं करते, उनका दर्द नहीं समझते, इसलिए आप मामा भी नहीं हो सकते।

04 वर्ष के नन्हे बच्चे मोहम्मद अली ने रखा रोजा

गर्मी में रोजे रखकर अल्लाह पाक का किया शुक्र अदा

गुढ़ीअम्बाड़ा । मुसलमानों के इबादत का मुबारक (पवित्र) महीना रमजान शुरू है इस माहे मुबारक महीने में रोजा रखने के साथ ही अल्लाह पाक की इबादत की जा रही है एवं बड़े बुजुर्गों के साथ ही छोटे-छोटे बच्चे भी इस भीषण गर्मी में रोजे रखकर भूख और प्यास की शिद्दत को महसूस कर अपने पाक परवर दिगार का शुक्र अदा करते नजर आ रहे हैं। इसी क्रम में *कर्मवीर कॉलोनी माईनस निवासी नसीमुद्दीन सिद्दीकी का पोता एवं सलमान (राजा)सिद्दीकी का बेटा नन्हा सा 04 वर्ष के बच्चे मोहम्मद अली के द्वारा रोजा रखा गया।

अधीक्षण अभियंता खुशियाल शिववंशी का किया स्वागत

छिंदवाड़ा । म.प्र. यूनाइटेड फोरम एवं विद्युत पेंशनर्स हित रक्षक संघ के संयुक्त तत्वाधान में मध्यप्रदेश पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी छिंदवाड़ा के अधीक्षण अभियंता के पद पर खुशियाल शिववंशी के कार्यभार गृहण करने पर स्वागत एवं अभिनंदन किया गया, फोरम के जिला संयोजक ने शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आप हमेशा ही अधिकारी कर्मचारियों के हितों की रक्षा हेतु सदैव तत्पर रहे है, एवं अब अधीक्षण अभियंता पद पर रहते हुए भी कर्मचारियों के हितार्थ कार्य करते रहेंगे, अधीक्षण अभियंता श्री शिववंशी ने पूर्ण आश्वस्त किया कि वे हमेशा ही अधिकारी कर्मचारियों के हितों के लिये साथ मे खड़े रहेंगे।इस अवसर पर श्री प्रभुनारायण नेमा, आर.के. सोनी, विनोद लोखेन्डे, जे पी त्रिपाठी, नरेंद्र सोंधिया, राजेश नेमा, महेंद्र गढेवाल, कृश्नोत्तम राजपूत, अरुण खरे,रमाकांत साहू, हेमंत साहू, श्याम अहिरवार,श्याम राजस, अनिल गिरिपुजे, अरुण चौरसिया, शीतल सोनी, रतन गोहिया, घनश्याम अहिरवार, आदि उपस्थित रहे।

अज्ञात महिला की सिरकटा शव मिलने से क्षेत्र में फैली सनसनी

खबर मिलने तक मृतका की शिनाख्त नहीं हो पाई है

बिछुआ ।जिले में लगातार अपराधों की संख्या में बढ़ोतरी देखी जा रही है ! वह भी खासकर महिलाओं के मामले में ! जिला पुलिस प्रशासन की लाख प्रयासों के बावजूद भी अपराधों का सिलसिला जारी है ! इससे ऐसा प्रतीत होता है की पुलिस का अपना तंत्र कमजोर पड़ गया है या फिर जिले भार में अपराधियों की संख्या में इजाफा हो गया है ? यह तो प्रशासन के अन्वेषण का बिषय है ! आज सुबह खमारपानी चौकी अंतर्गत ग्राम गढ़ेवानी आमाझिरी रोड किनारे एक अज्ञात महिला उम्र करीब 35 साल का शव जिसने बदन में लाल रंग की जरी लगी बॉर्डर वाली साड़ी और हाथ में लाल हरे रंग की कांच की चूड़ियां पहनी है ! कमर में चांदी जैसी धातु का खुचना एवम पैरो में चांदी जैसी धातु की पायल पहने है। चहरे का कोई पता नही है प्रथम द्रष्टया मालूम होता है की उक्त महिला की हत्या कर शव को यहाँ लाकर फेका गया है !

सूने मकान में हुई लगभग 25 लाख की चोरी

छिंदवाड़ा/इकलेहरा । इकलेरा बस स्टॉप जामई रोड चर्च के सामने स्थित मकान दिलीप डेहरिया अपने बच्चे को पटवारी के पेपर दिलाने के लिए 30 मार्च को परिवार के साथ जबलपुर व सतना पेपर दिलाने के लिए गए जैसे ही वह घर वापस लौटे तो देखा दरवाजा का ताला कटा हुआ पाया जब अंदर जाकर देखा तो अलमारी का ताला खुला हुआ था जब उन्होंने देखा कि नगदी 3 लाख 60 हजार, जेवर में 8 सोने की अंगूठी, दो सोने का हार 2 जोड़ा कंगन, 5 जोड़ी झुमके जिसमें झुमकी, 3 जोड़ी टॉप्स, चंद्रकड़ी वाली लटकाने, पूर्वजों के बने हुए जेवर दो चांदी के कमर पट्टा, कान के झुमके, 4 जोड़ी पायल, 3 जोड़ी मोटी पैर पट्टी परिवार ने जानकारी दी यह सब हमारी दो बेटियों की शादी के लिए बना कर रखे थे परंतु हमारी जो धरोहर पूंजी थी आज हम कंगाल हो गए इसकी रिपोर्ट पुलिस चौकी बड़कुही में किए हैं परंतु अभी तक किसी प्रकार की कोई कार्यवाही नहीं हुई

हर बूथ पर मनेगा पार्टी का स्थापना दिवस, सुनेंगे प्रधानमंत्री का संदेश

हर बूथ पर दीवार लेखन करेंगे पार्टी कार्यकर्ता, पदाधिकारी और जनप्रतिनिधि

छिंदवाडा । पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में 1980 में भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई। भारतीय जनता पार्टी दुनिया का सबसे बड़ा दल है और 16 राज्यों में उसकी सरकारें हैं। पंच-सरपंच से लेकर प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति पद तक पार्टी के कार्यकर्ता पदस्थ हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पार्टी की सरकार ने देश को सुशासन देते हुए दुनिया में भारत का मान-सम्मान बढ़ाया है। 6 अप्रैल को पार्टी का स्थापना दिवस है और प्रत्येक बूथ पर इसे भव्यता के साथ मनाया जाएगा। यह बड़े सौभाग्य की बात है कि इस दिन प्रत्येक बूथ पर कार्यकर्ताओं को प्रधानमंत्री, राष्ट्रीय अध्यक्ष का मार्गदर्शन मिलेगा, तो सामान्य कार्यकर्ताओं से लेकर पार्टी पदाधिकारी और जनप्रतिनिधि तक पार्टी के लिए दीवार लेखन करेंगे। जिला अध्यक्ष ने कहा कि जिले में बूथ सशक्तिकरण अभियान चल रहा है। इस दौरान बूथों को डिजिटल बनाया जा रहा है, तो पन्ना प्रमुख और पन्ना समितियों की नियुक्तियां भी की जा रही हैं। इस दिशा में कुछ काम बाकी है और जल्द ही उसे भी पूरा कर लिया जाएगा। इस अभियान के माध्यम से पार्टी ने अपने संगठन तंत्र की जो नेटवर्किंग की है, उसका प्रकटीकरण भी 6 अप्रैल को पार्टी के स्थापना दिवस पर होगा।

ध्वजारोहण के साथ मनेगा स्थापना दिवस

जिला अध्यक्ष ने कहा कि 6 अप्रैल को सभी बूथों पर भारत माता के चित्र के साथ पं. दीनदयाल उपाध्याय जी, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जी के चित्रों पर माल्यार्पण किया जाएगा एवं पार्टी का ध्वज फहराया जाएगा। इसके उपरांत प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष का संबोधन होगा। स्थापना दिवस पर सभी बूथों पर दीवार लेखन होगा, जिसमें शामिल होकर बूथ के कार्यकर्ता और बूथ अध्यक्ष से लेकर मंडल अध्यक्ष, जिला अध्यक्ष तक दीवार लेखन करेंगे।

हर पंचायत, वार्ड में होगी युवा चौपाल

जिला अध्यक्ष ने कहा कि युवा मोर्चा लगातार युवाओं को पार्टी से जोड़ने के लिए यूथ कनेक्ट की गतिविधियां आयोजित कर रहा है। पार्टी के स्थापना दिवस पर भी युवा मोर्चा ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्येक पंचायत और शहरी क्षेत्रों में प्रत्येक वार्ड में युवा चौपाल कार्यक्रम आयोजित करेगा। इन चौपालों में नव मतदाता भाग लेंगे। ये चौपाल पूरे जिले में एक ही दिन, एक साथ प्रारंभ होंगी।

श्रीमती भावना मलगाम होगी सौंसर की प्रभारी तहसीलदार

छिंदवाड़ा । कलेक्टर द्वारा तहसीलदारों की पदोन्नति के बाद नये तहसीलदारों की पदस्थापना की गई, जिसमें छिंदवाड़ा श्रीमती भावना मलगाम को सौंसर राजेन्द्रसिंह टेकाम चौरई, सुश्री शोभना ठाकुर मोहखेड़ कुमारी रूपेश्वरी कुंजाम बिछुआ का प्रभारी तहसीलदार बनाया है।

कर्मचारियों एवं शिक्षकों को कलेक्टर दर से वेतन दिया जावे

जुन्नारदेव । नगर पालिका जुन्नारदेव के कर्मचारियों ने मांगकी है उनका स्थानीयकरण एवं विनियमितकरण किया जावे एवं कलेक्टर दर से वेतन दिया जावे।

मतदाता सूची में नाम जुड़वाये व ठीक कराये

छिंदवाड़ा । म.प्र.राज्य निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार तथा म.प्र. नगर पालिका निर्वाचन नियम 1994 के नियम 04 के तहत जिला छिंदवाड़ा की नगर पालिका निगम छिंदवाड़ा के लिये दिनांक 1 जनवरी 2023 के संदर्भ में फोटोयुक्त मतदाता सूची का प्रारंभिक प्रकाशन 6 अप्रैल 2023 को सभी वार्ड के मतदान केन्द्रों पर किया जावेगा। जारी कार्यक्रम के आधार पर फोटोयुक्त मतदाता सूची तैयार करने के लिये दिनांक 6 अप्रैल से 18 अप्रैल तक वार्ड क्र. 01 से 48 तक निर्धारित स्थल पर दावेआपत्तियां नियुक्त प्राधिकृत कर्मचारी द्वारा प्राप्त की जावेगी। जिन मतदाताओं को अपना नमा जुडवाना, संशोधन, निरसन, एवं शुद्धिकरण करवाना है। अपने-अपने क्षेत्र, वार्ड में नियुक्त प्राधिकृत कर्मचारी से मतदान केन्द्रमें सम्पर्क कर निर्धारित स्थलों में जानकारी भरकर कार्यालय समय में जमा कर सकते है।

मेडिकल कालेज के डॉक्टर सिवनी में कर रहे प्रेक्टिस

मेडिकल कालेज के डीन को हटाने की मांग

छिंदवाड़ा । छिंदवाड़ा यूनीवर्सिटी बाईस चान्सलर व मेडिकल कालेज के डीन रामटेके जब से आये है इनकी कार्य प्रणाली विवादस्पद रही है, जिससे शासन की छबि खराब हो रही है। छिंदवाड़ा यूनीवर्सिटी के बाइस चान्सलर को सरकार ने हटा दिया है और अब डीन डॉ. रामटेके को भी हटाने की मांग डाक्टरों एवं नेताओं ने की है, डॉ. रामटेके की प्रशासनिक क्षमता विवादस्पद रही है जिससे मेडिकल कालेज हमेशा सुर्खियों में रहा है। बताया जाता है कि जबलपुर कमीशन बी.चन्द्रशेखर का इन्हें संरक्षण प्राप्त था किन्तु सरकार ने उन्हें हटा दिया है, उनके स्थान पर अभय वर्मा कमीश्नर आये है, जो पूर्व छिंदवाड़ा में कलेक्टर रहे है। मेडिकल कालेज के सभी डाक्टर खुलेआम अपनी दुकान खोलकर प्राईवेट प्रैक्टिस कर रहे हैं। बताया जाता है कि कुछ रेसिडेन्ट डाक्टर सिवनी जाकर प्रेक्टीस कर रहे हैं। जिला अस्पताल में आये दिन मरीजों एवं डाक्टरों का आपस में विवाद भी होते रहता है। साढ़े चार वर्षहो गये आज तक एम.आर.आई. मशीन चालू नहीं हुई। मेडिकल कालेज में डाक्टर के निवास के फ्लेटो की लिफ्ट बन्द है। नये कमीश्नर छिंदवाड़ा आयेंगे तो उन्हें ध्यान देने की आवश्यकता है। डीन से फोन पर चर्चा की कोशिश की गई तो उन्होने फोन नहीं उठाया।

कनपटी पर कट्टा रखकर लूट की वारदात

छिंदवाड़ा । लूट की एक बड़ी वारदात सामने आई है जहां अज्ञात लुटेरों ने एक ठेकेदार को निशाना बनाते हुये उसकी कनपटी पर कट्टा रखकर 4 तोला सोने की चेन मोबाइल फोन और नकदी लूटकर ले गये। वारदात सुबह तकरीबन 11 बजे के आसपास की है। रंजीत उर्फ बिल्टू चटर्जी कांट्रेक्टर हैं जिन्हें बदमाशों ने रिंग रोड केपास रिसोर्ट बनाने के नाम पर साइट दिखाने के लिए बुलाया था। जैसे ही अपनी कार से यहां पहुंचे तो बदमाश उनकी कार में आकर बैठ कए तथा उनकी कनपटी पर कट्टा अड़ाते हुए कांट्रेक्टर केगले सेसोने की चैन निकाल ली और उनकेपास रखे नकदी मोबाइल फोन और कार की चाबी छीनकर भाग गए। जैसे तैसे कांट्रेक्टर लिफ्ट लेकर थाने पहुंचेजहां उन्होने पुलिस को वारदात की जानकारी दी जिसके बाद पुलिस ने मौकेपर पहुंचकर मुआयना किया तथा मामले की जांच शुरू कर दी। घटना के बाद क्षेत्र में हड़कंप मचा हुआ है जबकि पुलिस ने नांकाबंदी भी शुरू कर दी है।

विद्युत विभाग के खिलाफ शीघ्र ही जन आंदोलन

बिजली समस्या निवारण प्रकोष्ठ शहर की बैठक

छिंदवाड़ा । शहर कांग्रेस बिजली समस्या निवारण प्रकोष्ठ की महत्वपूर्ण बैठक गांधी गंज क्षेत्र में शहर कांग्रेस बिजली समस्या निवारण प्रकोष्ठ के अध्यक्ष राहुल दुबे जी के निवास पर आहूत की गई जिसमें हनुमान जयंती पर आयोजित गदा यात्रा में प्रकोष्ठ की भागीदारी पर विस्तार से चर्चा की गई साथ ही संगठन के वार्ड इकाई पर गठन के अलावा विधुत पीड़ित उपभोक्ताओं को न्याय दिलाने व बिजली विभाग की निरंकुशता पर लगाम लगाने व्यापक आंदोलन पर सभी ने एकमत से सहमति प्रदान की इस अवसर पर जिला कांग्रेस बिजली समस्या निवारण प्रकोष्ठ के अध्यक्ष मुकेश उपाध्याय ने कहा कि हनुमान जयंती पर दशहरा मैदान से समय 11 बजे गदा यात्रा सिमरिया हनुमान मंदिर के लिए प्रस्थान करेगी जिसमें शहर कांग्रेस बिजली समस्या निवारण प्रकोष्ठ के सभी साथी शामिल होंगे इसके अलावा विधुत विभाग के खिलाफ शीघ्र ही जन आंदोलन प्रकोष्ठ के द्वारा किया जाएगा इस दौरान प्रमुखत: विधुत पीड़ित उपभोक्ता जितेंद्र सिंह चौहान ने विधुत विभाग की कारगुज़ारियों पर प्रकाश डाला शहर कांग्रेस बिजली समस्या निवारण प्रकोष्ठ के अध्यक्ष राहुल दुबे ने शीघ्र ही प्रकोष्ठ के शहर में गठन करने का आश्वासन दिया बैठक में धीरज धोंगे बंटी शुक्ला राजेन्द्र नाथ आदित्य मिश्रा बाबा ठाकुर सौरभ तिवारी नीरज ठाकुर डॉक्टर भटनागर आदि उपस्थित थे

विद्यार्थियों ने जाने यातायात के नियम

डीएसपी यातायात श्री चौबे ने ली कार्यशाला

छिन्दवाड़ा । जिले के पुलिस अधीक्षक विनायक वर्मा के कुशल मार्गदर्शन में नगर के नागपुर रोड स्थित अरिहंत इंटरनेशनल एकेडमी में यातायात के नियमों को लेकर विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया।जिसमे डीएसपी यातायात आर. पी. चौबे, नगर पालिक निगम स्वच्छता ब्रांड एम्बेसडर एवं एआईए के डायरेक्टर दीपकराज जैन, प्राचार्य रविशंकर माथुर, एडमिन विजेंद्र इंदुरकर सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थीगण, गुरुजन एवं स्कूल बस के सभी वाहन चालकगण उपस्थित रहे।सभी को डीएसपी यातायात चौबे ने यातायात के नियमों से अवगत कराकर विद्यार्थियों से कहा कि आप यातायात के नियमों का पालन अवश्य करें, अगर कोई भी नागरिक यातायात के नियम को तोड़ता है तो उसे अवश्य टोंके। अपने अभिभावकों से कहें कि पापा हम आपको बहुत प्यार करते हैं आई लव यू पापा अत: आप जब भी मोटर साईकल चलाएं तो हेलमेट अवश्य पहने एवं कार चलाते वक्त सीट बेल्ट अवश्य लगाएं इससे आप ओर हम सभी सुरक्षित रहेंगे।इस अवसर पर एआईए परिवार द्वारा डीएसपी ट्रैफिक चौबे का कागज की ग्रीटिंग, जलपात्र सहित कपड़े की थैली से स्वागत कर उनका अभिनन्दन किया ओर सभी ने यातायात के नियमों का पालन करने, ग्रीष्मकाल में पक्षियों के लिए दाना पानी रखने सहित छिन्दवाड़ा को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने का संकल्प लेकर पक्षियों के लिए जलपात्र रखकर उसमें जल भरा।

ऊर्जा संरक्षण पर्यावरण स्वच्छ एवं स्वस्थ्य बनाता है

ऊर्जा साक्षरता पर एक दिवसीय कार्यशाला

छिंदवाड़ा । शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय छिंदवाड़ा प्राचार्य डॉ. पी.आर चंदेलकर के मार्गदर्शन में ऊर्जा साक्षरता क्लब प्रभारी डॉ. जे. के डोंगरे एवम सहप्रभारी डॉ शालिनी पाटिल के नेतृत्व में एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें एनर्जी लीडर्स डॉ लक्ष्मीकांत चंदेला ,डॉ. निधि डोडानी , डॉ. सोसन्ना लाल एवम प्रो.महेंद्र साहू ने ऊर्जा मॉनिटर बनाए गए विशेष छात्रों एवम अन्य विद्यार्थियों को ऊर्जा संरक्षण की जानकारी देते हुए औरों को ऊर्जा साक्षर बनाने हेतु प्रेरित किया डॉ पाटिल ने बताया कि ऊर्जा संरक्षण पर्यावरण को अधिक स्वच्छ व् स्वस्थ बनाता है , हमे ऊर्जा को बचाने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए ,डॉ चंदेला ने कहा कि जीवन के हर पहलू में हम सभी को ऊर्जा संरक्षण के महत्व को समझना होगा , प्रो. महेन्द्र साहू ने बताया की शुरुआत हमेशा स्वयं से करे खुद के दैनिक जीवन में इसे अपनाने का प्रयास करे, ऊर्जा साक्षारता संयोजक डॉ. जे. के डोंगरे ने ऊर्जा सरंक्षण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अभियान से जुड़ने हेतु प्रेरित किया। डॉ निधि डोडानी ने इससे संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं पेंटिंग वाद विवाद स्लोगन निबंध आदि की जानकारी दी कार्यक्रम का संचालन एवम अंत में आभार प्रदर्शन डॉ सोसन्ना लाल द्वारा किया गया । कार्यक्रम को सफल बनाने में ऊर्जा मॉनिटर चंचलेश डेहरिया ,मानस भारद्वाज ,अंकित सराठे, लोकेश सनोडिया,विशाल सलामे , अंभरीष जय प्रकाश, बालकराम आदि का विशेष सहयोग रहा ।

एडवान्स पैथोलॉजी सील

बिना एमडी पैथोलॉजिस्ट के संचालित हो रही थी लैब

छिंदवाड़ा । गुलाबरा स्थित एडवांस पैथोलॉजी लैब पर उस समय हड़कंप मच गया जब शिकायत पर स्वास्थ्य विभाग की टीम ने दबिश दी मौके पर एमडी पैथोलॉजिस्ट मौजूद नहीं थी, सूत्रों के अनुसार डॉक्टर द्वारा कैंसिल लेटर सीएमएचओ को दिया गया कि अब अपनी सर्विस एडवांस पैथोलॉजी में नहीं दे रही है उसके बावजूद भी उनके लेटर पैड में सिग्नेचर द्वारा रिपोर्ट जारी की जा रही थी। मिली जानकारी के अनुसार लैब से जुड़ी एमडी पैथोलॉजिस्ट ने 1 मार्च को ही अपना इस्तीफा दे दिया है इस आशय की जानकारी उन्होंने लैब संचालक सहित सीएमएचओ छिंदवाड़ा को भी दे दी थी परंतु लैब संचालक द्वारा अपनी मनमानी करते हुए मरीजों को लगातार गुमराह करते हुए उन्हीं एमडी पैथोलॉजिस्ट की सिग्नेचर से रिपोर्ट जारी की जा रही थी, पैथोलॉजी लैब का यह गोरखधंधा बदस्तूर जारी है, अधिकतर पैथोलॉजी लैब में बाहर के डॉक्टर अपनी सिग्नेचर यूज करने के लिए 10 से 15 हजार प्रति माह पैथोलॉजी चलाने वाले डिप्लोमाधारी से लेते हैं, जिले भर में 5 से 6 एमडी पैथोलॉजिस्ट है और पैथोलॉजी लैबों की संख्या 40 से 45 अब देखना होगा कि स्वास्थ्य विभाग की इस कार्यवाही से क्या परिवर्तन देखने को मिलता है.

विशाल गदा यात्रा आज

सिमरिया मंदिर में गदा अर्पित की

छिंदवाड़ा । श्री हनुमान जन्मोत्सव के पावन पर्व पर मारुति नंदन सेवा समिति द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी विशाल गदा यात्रा आयोजित की गयी है मारुति नंदन सेवा समिति के संयोजक आनंद बक्षी ने बताया कि ऐतिहासिक दशहरा मैदान से सुबह 11.00 बजे दुपहिया वाहनों से विशाल गदा यात्रा निकाली जायेगी । दिनांक 06 अप्रैल 2023 दिन गुरुवार को सुबह 11.00 बजे माननीय कमलनाथ जी एवं माननीय नकुलनाथ जी के द्वारा छोटी बाजार में राम-जानकी पूजन, बड़ी माता पूजन एवं गदा पूजन किया जावेगा । गदा पूजन के उपरांत माननीय कमलनाथ जी एवं नकुलनाथ जी दशहरा मैदान में गदा यात्रा को रवाना करेगें ।आनंद बक्षी ने बताया कि काष्ठ की गदा विशेष सुसज्जित रथ में भक्तों के दर्शनार्थ रखी जाएगी । इस गदा यात्रा हेतु मातृशक्ति को लाल साडी अथवा लाल परिधान एवं पुरुष भक्तों को सफेद कुर्ता पैजामा का ड्रेस कोड निर्धारित किया गया है। मारुति नंदन सेवा समिति ने सभी हनुमान भक्तों से इस दिव्य गदा यात्रा में सहभागी होकर पुण्यार्जन का अनुरोध किया है । यह उल्लेखनीय है कि इस गदा को सिमरिया स्थित श्री हनुमान जी महाराज के चरणों में अर्पित किया जाएगा ।

विशेष- गदा यात्रा मार्ग

दशहरा मैदान से आरंभ होकर अनगढ़ हनुमान मंदिर से फव्वारा चौक से इंदिरा तिराहा से स्व. अमित ठेंगे चौक से पुन: इंदिरा तिराहा से अनगढ़ हनुमान मंदिर के सामने से राजीव भवन होती हुई पुराना नागपुर नाका, चंदननगर, सर्रा, इमलीखेडा, लिंगा, सरोराहेटी, गोरेघाट चौक से चिखली होते हुए सिमरिया मंदिर में पूर्णता को प्राप्त होगी ।

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी के स्थापना दिवस पर आज प्रदेश कार्यालय में आयोजन हुआ। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा, महामंत्री हितानंद, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष प्रभात झा आदि मौजूद रहे। पं. दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिमा पर माल्यार्पण हुआ, फिर प्रधानमंत्री मोदी एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष का संबोधन सुना गया। इसके बाद एक-दूसरे को मिठाई खिलाई गई।

दो दिन में ही बदला आदेश, अब आशीष को भोपाल की कमान

भोपाल। सरकार ने दो दिन बाद ही भोपाल कलेक्टर बदल दिया है। अब आशीष सिंह राजधानी के नए कलेक्टर होंगे। दो दिन पहले मुख्यमंत्री के अपर सचिव रहे कौशलेंद्र विक्रम सिंह को यहां कलेक्टर बनाया गया था। कौशलेंद्र अब पर्यटन विकास निगम के एमडी (प्रबंध संचालक) होंगे। आशीष अभी एमपीआरडीसी के एमडी हैं। पहले अविनाश लवानिया को जल निगम का एमडी बनाया गया था, जहां उन पर जल जीवन मिशन की योजनाओं को प्रदेश भर में क्रियान्वयन की जिम्मेदारी थी। निगम में केंद्र और राज्य के बजट का 60 हजार करोड़ का बड़ा हिस्सा खर्च होना था। सीएम खुद इसकी मॉनीटरिंग कर रहे थे। बावजूद इसके उन्हें जल निगम से हटाते हुए एमपीआरडीसी का एमडी बना दिया गया, यहां भी मुख्यमंत्री इस निगम के अध्यक्ष हैं।

बुधवार को चार आईएएस अफसरों की नई पोस्टिंग की गई। भोपाल कलेक्टर के पद से दो दिन पहले हटाए गए अविनाश लवानिया को एमडी जल निगम बनाया गया था, लेकिन वे इस पोस्टिंग से खुश नहीं थे। इसलिए उन्हें एमपीआरडीसी का एमडी बनाया गया है। एस. विश्वनाथन को एमडी पर्यटन विकास निगम से हटाते हुए एमडी जल निगम बनाया है। विश्वनाथन के कार्यभार ग्रहण करने पर पीएचई के प्रमुख सचिव संजय कुमार शुक्ला एमडी जल निगम के अतिरिक्त प्रभार से मुक्त होंगे।

तत्कालीन भोपाल कलेक्टर ने अविनाश लवानिया ने अपना प्रभार नवीन कलेक्टर को देने से पहले कार्यालय में सभी अधिकारियों कर्मचारियों से मुलाकात की जिसमें उन्होंने सभी का धन्यवाद व्यक्त किया।

देवास, कटनी और सिंगरौली विकास प्राधिकरण में अध्यक्षों की नियुक्त

राज्य शासन ने देवास, कटनी और सिंगरौली विकास प्राधिकरण में अध्यक्षों की नियुक्ति की है। देवास विकास प्राधिकरण में राजेश यादव, कटनी में पीताम्बर टोपनानी और सिंगरौली में दिलीप शाह को अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

हनुमान जन्मोत्सव पर निकाला गया चल समारोह

भोपाल। हनुमान जन्मोत्सव के अवसर पर लालघाटी स्थित हनुमान मंदिर से चल समारोह निकाला गया चल समारोह के अवसर पर गुफा मंदिर के महंत रामप्रवेश दास जी महाराज समस्त विश्व कल्याण के लिए हनुमान जी

महाराज से प्रार्थना की इस अवसर पर बड़ी संख्या में माताएं केरला साड़ी वस्त्र धारण किए हुए थी एवं युवा हाथों में झंडे लेकर चल रहे थे इस भव्य चल समारोह का लालघाटी गुफा मंदिर से रास्ते में विभिन्न जगहों पर लोगों ने फूल बरसा का स्वागत किया मां अन्नपूर्णा भोजनालय पर पंडित प्रियेश दुबे के नेतृत्व में बड़ी संख्या में लोगों ने फूल बरसा कर चल समारोह का स्वागत किया शैलेंद्र ने मोनू ने बताया कि चल समारोह का 23 वां वर्ष है समारोह में हनुमान जी महाराज शोभा यात्रा का बहुत श्रद्धा से पूजा करते हैं वह बहुत आनंद से सभी लोग हैं सम्मिलित होते इस अवसर पंडित ओंकार बाबा नीलमणि दुबे घनश्याम शर्मा सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु सम्मिलित हुए।

प्रदेश में रजक कल्याण बोर्ड का गठन होगा

भोपाल। चुनावी साल में सरकार ने तमाम जातियों को और वर्गों को साधने के लिए कोशिशें शुरू की है आज मध्य प्रदेश सरकार ने आज चार जातियों को साधने के लिए बोर्ड बनाए हैं। स्वर्ण कला बोर्ड, रजक कल्याण बोर्ड, तेलघानी बोर्ड और विश्वकर्मा कल्याण बोर्ड बनाने के आदेश जारी किए गए हैं। मुख्यमंत्री निवास में हुई पंचायतों में इनके गठन को लेकर घोषणाएं हुई थीं। तीन दिन पहले भोपाल के भेल इलाके में हुए साहू समाज के सम्मेलन में सीएम ने तेल घानी बोर्ड के गठन का ऐलान किया था। ये सभी बोर्ड मध्य प्रदेश राज्य कौशल विकास एवं रोजगार निर्माण बोर्ड के अधीन ये बोर्ड संचालित किए जाएंगे। प्रत्येक बोर्ड में अध्यक्ष के साथ चार सदस्य शामिल किए जाएंगे। इस बोर्ड में अध्यक्ष और चार सदस्य होंगे। जिन्हें शासन द्वारा मनोनीत किया जाएगा। मप्र राज्य कौशल विकास एवं रोजगार निर्माण बोर्ड द्वारा इनके सचिवालयीन काम संचालित होंगे। बोर्ड के जरिए सकल तैलिक वर्ग, रजक समाज, स्वर्णकार समाज और विश्वकर्मा समाज के युवाओं के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण, उद्यमिता संवर्द्धन, रोजगार और स्वरोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने, स्टार्ट अप, व्यवसाय, उद्यम के लिए ऋण की व्यवस्था को लेकर अपनी अनुशंसाएं शासन को भेजेंगे। बोर्डों को विभाग के अधीन स्वतंत्र रूप से काम करने का अधिकार होगा। बोर्ड के कार्य संचालन के लिए नियम बनाने और आदेश जारी करने के अधिकार भी होंगे। मप्र शासन से बोर्डों को मप्र राज्य कौशल विकास एवं रोजगार निर्माण बोर्ड के जरिए वित्तीय सहायता मिलेगी।

22 मई को पूरे प्रदेश में रहेगी महाराणा प्रताप जयंती की छुट्टी

भोपाल। अब 22 मई को पूरे प्रदेश में महाराणा प्रताप जयंती की छुट्टी रहेगी। मध्यप्रदेश सरकार ने इस संबंध में आदेश जारी कर सामान्य अवकाश की घोषणा कर दी है, सामान्य प्रशासन विभाग ने आदेश जारी करते हुए बताया कि पिछले साल 2022 में इसे ऐच्छिक अवकाश किया था, जिसे अब सामान्य अवकाश घोषित किया गया है। जानकारी के अनुसार मध्यप्रदेश शासन सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा 5 अप्रैल 2023 को अधिसूचना जारी की गई है, जिसमें बताया गया कि राज्य शासन द्वारा 22 मई को महाराणा प्रताप जयंती पर जिसे पूर्व में ऐच्छिक अवकाश घोषित किया गया था, उसे अब संपूर्ण मध्यप्रदेश में सामान्य अवकाश घोषित किया जाता है। आपको बतादें कि 5 जनवरी को सीएम हाउस में क्षत्रिय समागम में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने महाराणा प्रताप जयंती पर अवकाश घोषित करने की घोषणा की थी। चूंकि 19 दिसंबर 2022 को जारी हुई अधिसूचना के अनुसार 22 मई को ऐच्छिक अवकाश घोषित किया था, जिसे अब सामान्य अवकाश घोषित कर दिया है।

भोपाल में दो दिन हो सकती है बारिश, कई शहरों में बूंदाबांदी और बिजली चमकेगी

भोपाल। मध्यप्रदेश में अगले दो दिन बाद मौसम फिर बदलेगा। कई शहरों में हल्की बूंदाबांदी हो सकती है। दोपहर बाद बादल भी छाएंगे। भोपाल में 7 और 8 अप्रैल को बारिश के आसार हैं। आकाशीय बिजली भी चमकेगी। मौसम वैज्ञानिकों की मानें तो नया सिस्टम एक्टिव होने, ट्रफ लाइन के गुजरने और चक्रवात का असर होने से मौसम बदला है। 10 अप्रैल तक मौसम का मिजाज ऐसा ही रहेगा। इससे गर्मी नहीं बढ़ेगी।

मौसम विभाग के अनुसार उत्तर भारत में नया सिस्टम एक्टिव है। वहीं, एक ट्रफ लाइन सेंट्रल छत्तीसगढ़ से साउथ तमिलनाडु की ओर गुजर रही है। सेंट्रल एमपी पर चक्रवाती हवाओं का घेरा है। प्रदेश के उत्तरी और मध्य क्षेत्र में यह एक्टिव है। इस कारण आए बादल कहीं-कहीं बूंदाबांदी करा सकते हैं। बादलों का यह दौर एक सप्ताह तक बना रहेगा। भोपाल में 7 और 8 अप्रैल को बारिश होने की संभावना है।

पिछले 24 घंटे के दौरान बड़वानी के राजपुर और सेंधवा में 4-4 मिमी, निवाली में 1.4, ठीकरी में 1, बुरहानपुर के नेपानगर में 0.5 मिमी बारिश हुई। खरगोन शहर, सेगांव, गोगांवां, धार के सरदारपुर, डही, बैतूल, खंडवा शहर, छिंदवाड़ा, बालाघाट के तिरोड़ी और खैरलांजी में भी पानी गिरा। राजधानी में 7 और 8 अप्रैल को तेज बारिश हो सकती है। मौसम विभाग ने बादलों की गरज-चमक होने की बात भी कही है। 9 और 10 अप्रैल को भी मौसम का मिजाज बदला सा रहेगा। दोनों दिन बादल रहेंगे।

तापमान में बढ़ोतरी नहीं

बादल छाने और हल्की बूंदाबांदी होने से दिन के तापमान में बढ़ोतरी नहीं होगी। भोपाल में तापमान 36 डिग्री के आसपास ही रहेगा। इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर और उज्जैन में भी तापमान में ज्यादा उछाल नहीं होगा। अप्रैल के दूसरे पखवाड़े में जरूर तेज गर्मी असर दिखाने लगेगी। प्रदेश में 2 अप्रैल के बाद 4 अप्रैल को भी पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय रहा। इस कारण प्रदेश के कई हिस्सों में हल्की बूंदाबांदी हुई। पिछले दो दिन में नीमच, गुना, भोपाल, अशोकनगर, नर्मदापुरम, देवास, सीहोर, दमोह, टीकमगढ़, सागर और कटनी जिले में बौंछारें गिरीं। वहीं, दिन-रात के तापमान में भी हल्की गिरावट हुई।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीडी शर्मा ने नई दिल्ली में गत दिवस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा से मुलाकात की।

कैंट विधानसभा 99 अंतर्गत रांझी माने गांव मोहनिया वार्ड क्रमांक 70 में पानी ,रोड नाली ,आवास योजना की समस्याओं को लेकर पूर्व कैंट बोर्ड उपाध्यक्ष अभिषेक चिंटू चौकसे ,राजू कनौजिया मोहन उइके के नेतृत्व में धरना प्रदर्शन कर कैंट विधायक का पुतला दहन किया गया।

500 से अधिक आदिवासियों ने कलेक्ट्रेट में गुजारी रात

वन कटाई के खिलाफ प्रदर्शन करने बिस्तर लेकर पहुंचे, जवाब मिलने पर ही जाएंगे

बुरहानपुर। बुरहानपुर में 500 से अधिक आदिवासियों ने कलेक्ट्रेट परिसर में रात बिताई। आदिवासी बुधवार दोपहर में वन कटाई पर रोक लगाने के लिए ज्ञापन देने पहुंचे थे। आज यानी गुरुवार सुबह भी वे लोग डटे हुए हैं। जैसे ही दफ्तर में अफसर-कर्मचारियों का आना शुरू हुआ आदिवासी गेट के सामने फिर जमा हो गए और नारेबाजी करने लगे।

आदिवासी बुधवार को अपने साथ बिस्तर भी लेकर आए थे। अफसरों को ज्ञापन देकर जवाब का इंतजार करने लगे। जब रात 9 बजे तक भी कोई जवाब नहीं मिला तो कलेक्ट्रेट परिसर में ही बिस्तर डालकर सो गए। कुछ ग्रामीण देर रात तक भजन करते रहे।

जागृत आदिवासी दलित संगठन के बैनर तले यह आदिवासी कलेक्ट्रेट परिसर में विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। उनका कहना है कि जब तक प्रशासन से यह जवाब नहीं मिल जाता कि वन कटाई रोककर अतिक्रमणकारियों पर कार्रवाई होगी, तब तक वह यहां से नहीं जाएंगे।

जागृत आदिवासी दलित संगठन की कार्यकर्ता आशाबाई जादौन ने कहा कि दोपहर से रात 9 बजे तक अफसरों ने कोई सकारात्मक जवाब नहीं दिया। अंतराम आवासे ने बताया कि अफसरों से बात की, लेकिन आश्वासन नहीं मिला। डीएफओ आए, उन्होंने भी केवल यही कहा कि कार्रवाई कर रहे हैं, समय लगेगा। जंगल तेजी से कट रहा है। प्रशासन रोक नहीं पा रहा है।

कब्जे के लिए पेड़ काट रहे बाहरी लोग

बुरहानपुर जिले के नेपानगर से करीब 30 किमी दूर नावरा रेंज का घाघरला जंगल। यह जंगल नावरा और नेपानगर के एरिया में आता है। अतिक्रमणकारी यहां कब्जा करते चले जा रहे हैं। चार दिनों से 300 से अधिक अतिक्रमणकारी जंगल में कब्जा किए हुए हैं। तेजी से वन कटाई हो रही है, जिस पर पुलिस और वन विभाग अंकुश नहीं लगा पा रहा है। कई बार पुलिस के कार्रवाई करने पर अतिक्रमणकारियों ने पुलिस पर ही पथराव कर दिया। यह लड़ाई जंगल काटकर जमीन हथियाने की है। विवाद आदिवासियों और अतिक्रमणकारियों के बीच है। चूंकि अतिक्रमणकारी भी आदिवासी हैं। ऐसे में पुलिस-प्रशासन भी सख्त कदम उठाने से बच रहे हैं।